चन्दामामा
नवम्बर १९८०

जीवन और हनु पुनः याद दिलाते हैं

मेरे जन्म दिन पर
एक नया उपहार
यूकोबैंक की
पास बुक
उपहारों को जुटाएगा यह उपहार
देखो ! यूकोबैंक की पास बुक का
कमाल ।
इस अनूठे उपहार के लिए
माँ को धन्यवाद । और मेरी
छोटी-छोटी बचत को कई
गुना बढ़ा देने के लिए
यूकोबैंक को भी धन्यवाद ।
यूनाइटेड कमर्शियल बैंक
यह मित्रवत् बैंक आपके पास-पड़ोस में ही है ।
UCO/CAS-69/80 HIN

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "धर्मात्मा" है।

"पाताल राक्षस" नामक कहानी के द्वारा हमें यह उपदेश मिलता है कि अपने स्वार्थ के वास्ते नर रूप राक्षस किस तरह दारुण कृत्य करने के लिए तैयार हो जाते हैं! ऐसे लोगों को पहचान लेना कोई आसन काम नहीं है।

अमर वाणी

पश्य दानस्य महात्म्यं, सद्यः प्रत्यय कारणम्।
यत्र भावादपि द्वेषी, मित्रतां याति तत्क्षणात्॥

[दान का प्रभाव बड़ा महान होता है! वह यथा शीघ्र विश्वास पैदा करता है। मुंह मांगी वस्तु देने पर तत्काल शत्रु भी मित्र हो जाता है।]

वर्ष : ३३ | नवंबर १९८० | अंक : ३

एक प्रति : १-५० :: वार्षिक चन्दा : १८-००

एम. सुकुमार जैन, शिवमोग्गा (कर्नाटक)

प्र.: प्रलय के समय क्या सारा संसार सचमुच डूब जाता है? इतना सारा पानी कहाँ से आता है?

उ.: पुराण गाथाएँ (नोवा, मनु वगैरह कथाएँ) बताती हैं कि सारे संसार में प्रलय आ गया था। लेकिन इनके कोई शास्त्रीय आधार नहीं मिलते। फिर भी अगर प्रलय आ जाएगा तो सारे संसार को डुबा सकनेवाला पानी बर्फ़ के रूप में अधिकांश भाग दक्षिणी ध्रुव के प्रदेश में तथा थोड़ा भाग उत्तरी ध्रुव प्रदेश में है।

एस. सुरेश, अलेप्पी (केरल)

प्र.: अणु बम के विस्फोट के क्या परिणाम होते हैं?

उ.: अणु बम के विस्फोट के समय धार्मिक शक्तिवाला थोड़ा पदार्थ शक्ति के रूप में बदल जाता है। पदार्थ का मतलब अपार शक्ति का भौतिक रूप मात्र है! इसलिए अणु बम के विस्फोट के समय सारा लय रूप पदार्थ शक्ति में बदल जाता है। यह शक्ति असंख्य करोड़ों डिग्रियों के उष्ण के रूप में तथा अत्यधिक ख़तरनाक गामा किरण इत्यादि प्रसार के रूप में एक साथ प्रकट होती है। उष्ण की मात्रा के आधार पर जैसे भी घनीभूत पदार्थ गल जाता है। किरण प्रसार के द्वारा विस्फोट के समीप में रहनेवाले सारे प्राणी नष्ट हो जाते हैं। दूर पर रहनेवाले भी लुकिमिया वगैरह खतरनाक बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। प्रकट रूप में खतरे का प्रभाव स्पष्ट न दिखाई देता हो, लेकिन "रेडियेशन" के प्रभाव से उनके भी विकलांग बच्चे पैदा हो सकते हैं।

ये सारे दुष्परिणाम अणु बम के विस्फोट के शिकार हुए हीरोषिमा, नागसाकी वगैरह जापान के नगरों में हुए हैं। मगर उन नगरों पर जो बम गिराये गये हैं, उनसे भी ज्यादा शक्तिशाली बम आज तैयार होकर सुरक्षित हैं! यही कारण है कि आज संसार के सभी विवेकशील व्यक्ति अणु बमों पर निषेध करने की मांग करते हैं!

[८८]

किले को दुश्मन के हमले से बचने लायक मरम्मत करने का काम सेनापति सारस को सौंपा गया। सेनापति ने बताया कि क़िला तो मज़बूत है। रसद और नमक का संग्रह करके रखना आवश्यक है। इस बीच यह खबर आई कि सिंहल द्वीप का राजा मेघवर्ण परिवार के साथ आया हुआ है और वह हिरण्य गर्भ से मिलना चाहता है।

"मेघवर्ण विवेकवान है! उनको प्रवेश करा दो।" हिरण्यगर्भ ने कहा।

सर्वज्ञ ने पूछा—"महाराज, उनका स्वागत कैसे करना होगा? एक मित्र के रूप में या शत्रु के रूप में? या तटस्थ के रूप में?"

"वह तो भूमि पक्षी है। इस कारण हमें मानना होगा कि वह चित्रवर्ण के पक्ष का है। अगर वह अपनी जाति के भूमि पक्षियों को छोड़ आया हो, तो उसे प्राणों के साथ रहने नहीं देना है। वह दूर से आया हुआ है, इस वजह से उसे अंदर आने दो।" हंस राजा हिरण्यगर्भ ने कहा।

"जो आज्ञा! हमारा क़िला तो मजबूत है। हमारे भेदिये भी वहाँ पहुँच गये हैं, इसलिए तोतेवाले दूत को भी हम प्रवेश करने देंगे। हम यह भी जानते हैं कि एक जमाने में चाणक्य ने अपने दूत के द्वारा नंद का बध कराया है, इसलिए आप दूत को काफी दूर पर अंग रक्षकों के बीच रखियेगा।" चकोर सर्वज्ञ ने समझाया।

इसके बाद तोता और मेघवर्ण नामक कौआ सभा भवन में बुलाये गये। तोते ने झुककर प्रणाम किया, अपने लिए सुरक्षित एक आसन पर बैठकर बोला—"हे हिरण्य

गर्भ! अगर आप को थोड़ा-सा भी अपने प्राणों पर मोह है, और राज्य छोड़कर भाग जाना चाहते हों, तो राजाधिराज महान शक्तिशाली चित्रवर्ण ने आदेश दिया है कि आप तुरंत उनके पास जाकर उनकी अधीनता स्वीकार करे।"

हिरण्यगर्भ आवेश में आकर गरज उठे—"क्या इसका मुँह बंद करनेवाला कोई इस सभा में नहीं है?"

इस पर मेघवर्ण (कौआ) बोला—"महाराज, आप आज्ञा दीजिए। मैं अभी इस दुष्ट का वध कर डालूंगा।"

पर सर्वज्ञ ने समझाया—"महाराज, यह दूत तो अपने राजा का प्रतिनिधि है। इसका वध नहीं करना चाहिए। इसको प्राणों के साथ छोड़ दीजिए।"

ये बातें सुन हिरण्यगर्भ ने अपने ऊपर क़ाबू रखा और तोते को वहाँ से जाने दिया। इसके बाद सर्वज्ञ उसे बाहर ले गया, रिवाज़ के अनुसार उसे सोना और अन्य पुरस्कार देकर भेज दिया। तब तोता अपने देश को लौट आया।

चित्रवर्ण ने तोते से पूछा—"क्या समाचार है?"

"महाराज, आप युद्ध की तैयारियाँ कीजिए। कर्पूर देश पृथ्वी का स्वर्ग है। शक्तिशाली भी है। लेकिन राजा हिरण्य गर्भ और मंत्री सर्वज्ञ अपने हठ पर डटे हुए हैं।" दूत तोता बोला।

युद्ध अनिवार्य है। इस कारण आगे के कार्यक्रम के बारे में चित्रवर्ण ने अपने मंत्रियों के साथ चर्चा की। दूरदर्शन (गीध) मंत्री ने सलाह दी कि युद्ध अनिवार्य होने पर ही हमें लड़ाई की तैयारियाँ करनी हैं, उस वक़्त भी हमें अपनी और दुश्मन की ताक़त का अंदाज़ा लगाना चाहिए, तब भी युद्ध को रोकने के लिए समझौते के छोटे-मोटे प्रयत्न हमें करने चाहिए, जल्दबाजी में आकर युद्ध करना उचित नहीं है।"

इसके बाद गीध ने यों कहा—"अच्छे योद्धाओं की छोटी-सी सेना भी कायर

और प्रशिक्षण न पाई गई बड़ी सेना से कहीं शक्तिशाली होती है। कायरों का भाग जाना उस सेना के हिम्मतवर सैनिकों की भी हार का कारण बन जाता है। यश और सम्मान साहस के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसलिए हमें इन सारी बातों पर विचार करना होगा।"

इस पर राजा खीझकर बोले–"यह सारा प्रलाप ही क्यों? हम इसी वक़्त हमला कर बैठेंगे।" यों कहकर उठ खड़े हुए, तब ज्योतिषियों के द्वारा निर्णीत मुहूर्त पर सेना रवाना हो गई।

हिरण्यगर्भ को ख़बर मिली कि चित्रवर्ण हमला करने चल पड़े हैं और रास्ते में मलय पर्वत पर डेरा डाले हुए है और उसका कोई भेदिया क़िले के भीतर है। इसलिए क़िले में उसकी खोज शुरू हुई। तब जाकर मेघवर्ण (कौआ) के प्रति सर्वज्ञ की शंका जाती रही।

हिरण्यगर्भ ने कहा–"अगर वह कौआ दुश्मन का भेदिया है, तो वह दुश्मन के दूत को मारने के लिए क्यों तैयार हो गया? अलावा इसके युद्ध की घोषणा के बहुत समय पहले ही वह हमारे पास पहुँच गया था।"

"इन सब बातों के बावजूद वह पराया है, उस पर हमें यक़ीन नहीं करना चाहिए।" सर्वज्ञ ने कहा।

"पराये होने मात्र से हमें उस पर शक नहीं करना चाहिए। जैसे अपने लोगों के बीच दुष्ट लोग होते हैं, वैसे पराये लोगों में भी अच्छे लोग और तटस्थ भी हो सकते हैं न?" राजा ने कहा।

"मंत्रियों का धर्म राजा को सलाह देना होता है। राजा के सामने सत्य को छिपानेवाले वैद्य, पुरोहित और मंत्री राजा के स्वास्थ्य, नीति और उन्नति को नष्ट कर देते हैं।" सर्वज्ञ ने कहा।

"अब हमें करना क्या है? हमारे भेदियों के द्वारा समाचार मिला है कि चित्रवर्ण अपने मंत्री गीध की सलाह का तिरस्कार करके हम पर हमला करने जा

रहे हैं। दुश्मन की फ़ौज यात्रा की वजह से थक गई होगी। वह फ़ौज यह प्रदेश, यहाँ की नदियों और पहाड़ों की जानकारी नहीं रखती। इसलिए उनको चकमा देने के लिए यही एक अच्छा मौक़ा है। सारस को जाकर यह काम करना होगा।" राजा ने कहा।

आख़िर यही हुआ। चित्रवर्ण की सेना जो आगे बढ़ी चली आ रही थी, पहाड़ों, जंगलों और रास्ते में नष्ट हो गई।

पराजित होने पर चित्रवर्ण ने दूरदर्शन की सलाह मांगी। जल्दबाजी में आकर युद्ध की घोषणा करने पर दूरदर्शन ने राजा की आलोचना की। इस पर राजा ने सेनाओं को वापस ले जाने का उपाय पूछा, तब गीध दूरदर्शन ने समझाया—"महाराज, आप निराश मत होइये। एक और उपाय है। आप तुरंत हमारी सेनाओं को क़िले पर केन्द्रित कर दीजिए।"

इस पर राजा ने ऐसा ही प्रबंध किया।

भेदिये के रूप में गये बगुले ने जब यह समाचार दिया, तब सर्वज्ञ ने हिरण्यगर्भ को समझाया—"आप क़िले को मज़बूत कराइये। धन के ख़र्च होने की फ़िक्र मत कीजिए। सैनिकों में दिल खोलकर धन बांटकर उनके द्वारा क़िले की रक्षा का प्रबंध कीजिए।"

क़िले से निकलकर दुश्मन का सामना करने की बात मेघवर्ण (कौआ) ने कही, पर सर्वज्ञ ने यह बात नहीं मानी, उन्होंने स्पष्ट कहा कि हम सब को क़िले के भीतर रहकर ही उसकी रक्षा करनी है।

यही कारण है कि जब चित्रवर्ण की सेनाओं ने क़िले को घेर लिया, तब क़िले के सभी फाटकों के पास भयंकर लड़ाइयाँ हुईं। हिरण्यगर्भ के सैनिक जब इस प्रकार हिम्मत के साथ लड़ रहे थे, तब मेघवर्ण तथा अन्य कौए भी क़िले के भीतर के मकानों पर जलती लकड़ियों को डाल चिल्लाने लगे—"आग लग गई है! सर्वत्र आग लगी है! क़िला दुश्मन के हाथ में चला गया है। क़िले का पतन हो गया है।"

[६]

[सेनापति समरसेन और उसके सैनिकों को जंगल में चतुर्नेत्र नामक मांत्रिक ने देखा, मांत्रिक उनसे कोई सवाल पूछ रहा था, तभी वहाँ पर एकाक्षी मांत्रिक आया। उन मांत्रिकों के सेवकों के बीच भयंकर लड़ाई हुई। उनके चले जाने के बाद समीप के अग्नि पर्वत से आग की लपटें उठीं। बाद...]

समरसेन और सैनिक भयभीत हो देख ही रहे थे, तभी अग्नि पर्वत से धुआ और शोलों के साथ आँखों को चौंधियानेवाले अंगारे उड़कर चारों तरफ़ बिखरने लगे, फिर वहाँ का सारा प्रदेश धुए से भर उठा।

समरसेन को जिस रास्ते से होकर आगे बढ़ना था, उसी रास्ते में यह अग्नि पर्वत फूट पड़ा। ऐसी हालत में उन्हें पूर्वी तट पर पहुँचने के लिए एक दूसरे रास्ते से जाना पड़ा। समरसेन मुड़कर आगे बढ़ा। भयकंपित सैनिकों ने चुपचाप अपने सेनापति का अनुकरण किया। अब सभी लोग पश्चिमी दिशा की ओर मुड़कर चल रहे थे, मगर वे जिन नावों को छोड़ आये थे, वे पूर्वी तट पर थीं। लेकिन उन्हें एक ओर मांत्रिक और खूंख्वार घेरे हुए थे तो दूसरी तरफ़ अग्नि पर्वत फूटकर

उनके रास्ते को रोके हुए था, इस कारण उन्हें सीधे पूर्वी तट की ओर बढ़ना किसी हालत में मुमकिन न था।

घने वृक्षों तथा झाड-झंखाड़ों के बीचों बीच रास्ता बनाकर समरसेन और उसके सैनिक आगे बढ़ रहे थे। इस बीच अग्नि पर्वत से शिलाओं के गलने से बह द्रव पदार्थ जो लावा कहा जाता है, आग उगलते ढलाऊँ प्रदेश की ओर बह रहा था। जंगली जानवर भयंकर रूप से गर्जन करते चारों ओर दौड़ रहे थे। इसे देख समरसेन और उसके सैनिक भयभीत हो उठे। अब उनके सामने अपनी जान बचाने की जटिल समस्या थी।

समरसेन ने चारों ओर एक बार नज़र डालकर देखा। उसने सोचा कि खौलकर बहनेवाले द्रव पदार्थ के एक नदी का रूप लेने के पहले ही किसी ऊँचे प्रदेश में पहुँच जाना ख़ैरियत होगी। वरना इसके साथ खूँख्वार जानवरों का भी उन्हें सामना करना पड़ेगा। अब उनकी हालत ऐसी हो गई कि मानो वे दो पाटों के बीच आ गये हो!

समरसेन अपने सैनिकों को हिम्मत बंधाते हुए आगे चल रहा था। अचानक उन्हें एक विचित्र दृश्य दिखाई पड़ा। समरसेन इस भ्रम में पड़ गया कि यह दृश्य कोई भ्रम है या सच है! चार क़दम आगे बढ़ने पर उसे लगा कि वह जो कुछ देख रहा है, वह कोई सपना नहीं, बल्कि यथार्थ है।

समरसेन ने रुककर अपने सैनिकों को सावधान किया, पर देखता क्या है? सामने की डालों पर एक आदमी औंधे मुंह लटक रहा है! लेकिन यह पता नहीं चल रहा था कि वह जिंदा है या मरा है। उसके हाथ-पैर बेलों से बंधे हुए हैं। उसका चेहरा देखने पर वह एक जंगली जाति का लग रहा था!

अपने सेनापति के साथ सैनिक भी चकित हो उस दृश्य को देख रहे थे।

तब जाकर उन्हें पता चला कि इस मांत्रिक द्वीप में खूंख्वार जानवर और मांत्रिक ही नहीं, बल्कि साधारण मनुष्य भी निवास करते हैं! समरसेन ने कहा–"इस जंगली आदमी को ऐसी कठिन सजा किसने दी होगी?"

सैनिकों ने कोई जवाब नहीं दिया, इस पर समरसेन ने फिर कहा–"यह निश्चय ही जंगली जाति का है! हमें पता लगाना होगा कि ये लोग कहाँ बसते हैं? इस भयंकर जंगल में ये लोग आये कैसे? इससे भविष्य में हमारा बड़ा उपकार हो सकता है!"

सैनिक पूर्ण रूप से घबरा गये थे, वे यही सोच रहे थे कि कब वे लोग पूर्वी तट पहुँचकर नावों पर सवार हो अपने राज्य में पहुँच जायेंगे! यह उनका विचार तो सही था। पर रास्ता ही कहाँ? समरसेन ने एक क़दम आगे बढ़कर औंधे मुँह लटकनेवाले आदमी की ओर सावधानी से परखकर देखा। उसके शरीर पर कहीं कोई घाव न थे। शायद उसके दुश्मनों ने उसे यों लटकाया होगा! यह भूख-प्यास से तड़पकर मर गया होगा!

उस मरे हुए आदमी पर सब को दया आ गई, समरसेन पल-दो पल सोचकर फिर बोला–"इसके पीछे कोई गुप्त बात

होगी ; पर हम इसे कैसे जान ले? लेकिन एक बात सच है! इस द्वीप का थोड़ा प्रदेश मानवों के निवास योग्य ज़रूर बना हुआ है। मगर इसकी इस दारुण हत्या का कारण क्या है? इसका रहस्य हमें जानना ही होगा।"

इतने में समरसेन की दृष्टि दूर पर गिरी एक वस्तु पर पड़ी। उसने आगे बढ़कर वह चीज़ अपने हाथ में ली। वह टूटी हुई एक लौकी का तुंबा था। उसका मुँह एकदम पतला और तंग था। उस पर एक रस्सी बंधी थी। उसका पेंदा फटा हुआ था। उस तुंबे को कोई वहाँ पर फेंक गया था। परखकर देखने पर ऐसा मालूम हुआ कि यात्रा के समय पानी ले जाने के लिए काम में लाया जानेवाला साधन है वह! समरसेन को आश्चर्य हुआ। आखिर इस भयानक जंगल में लौकी का यह तुंबा कैसे यहाँ तक पहुँचा। यह जंगल तो निर्जन है। मानव मात्र के लिए घुसने लायक़ नहीं है।

"ओह, यह सब कुंडलिनी देवी की कृपा का फल है।" यह कहते समरसेन ने कृतज्ञतापूर्वक आसमान की ओर हाथ उठाकर प्रणाम किया।

सैनिक इस बात की कल्पना नहीं कर पाये कि उनका नेता ऐसा क्यों करता है? उन्हें आश्चर्य चकित देख समरसेन बोला— "अब हमें डरने की कोई बात नहीं है। मानवों की निवास भूमि के निकट हम पहुँच गये हैं। इस अभागे को किन्हीं मांत्रिकों ने नहीं, बल्कि अपनी ही जाति के मानवों ने यों औंधे मुँह लटकाया होगा। लौकी का यह तुंबा मनुष्य ही इस्तेमाल करते हैं, इसलिए यदि हम थोड़ी सावधानी के साथ ढूंढ ले तो हमें इस बात का ज़रूर पता चलेगा कि वे मनुष्य किस रास्ते से यहाँ पर आये और किस रास्ते से चले गये?"

दूसरे ही क्षण सैनिक उस प्रदेश में मनुष्यों के द्वारा अंकित पगडंडी की खोज

करने लगे। थोड़ी ही देर में वे अपने काम में सफल हुए। वहाँ से एक दो कोस की दूरी पर एक मैदान पर अंकित मनुष्यों के पैरों के निशानों से यह पता चला कि कई आदमी दल बांधकर उस मैदान से होकर पैदल चले गये हैं।

इस पर सब लोग उत्साह में आ गये और उस रास्ते पर चलने लगे। एक घड़ी के अन्दर वे लोग एक ऊँचे प्रदेश पर पहुँचे। वहाँ पर खड़े हो चारों ओर नज़र दौड़ाई। अग्नि पर्वत से बराबर अभी तक शोले फूट रहे थे। जान के डर से जंगली जानवर भागते जा रहे थे। दूर पर एक-दो स्थानों पर जंगल के जलने की सूचनाएँ दिखाई दे रही थीं। आग चारों दिशाओं में फैलने लगी।

समरसेन आगे-आगे चल रहा था। उसके सैनिक उसका अनुसरण करने लगे। उन्हें यह डर सताने लगा कि किसी भी क्षण उनके रास्ते को कोई मांत्रिक या खूंख्वार जानवर रोक सकते हैं। सब लोग मन ही मन कुंडलिनी देवी की प्रार्थना करने लगे। तलवार और तीर-कमान अपने अपने हाथों में तैयार रखकर पैदल चलते हुए वे लोग थोड़ी देर में एक नदी के किनारे पहुँचे।

नदी की धारा की गति तेज थी। नदी के बीच जहाँ-तहाँ बड़ी चट्टानें फैली हुई नज़र आ रही थीं। धारा के चट्टानों से टकराने से बड़ी आवाज़ हो जाती थी। नदी में उतरने से उनकी हिम्मत जवाब देने लगी। उनके मन में यह शंका पैदा हुई कि उस नदी को पार कर उस किनारे पहुँच जावे या नहीं? समरसेन को लगा कि जब उसे अपने लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग मालूम नहीं है, तब चाहे नदी के इस पार रहे या उस पार, दोनों बराबर है।

वास्तव में उन्हें पूर्वी समुद्र तट पर पहुँचना है, मगर अग्नि पर्वत फूटने से वे
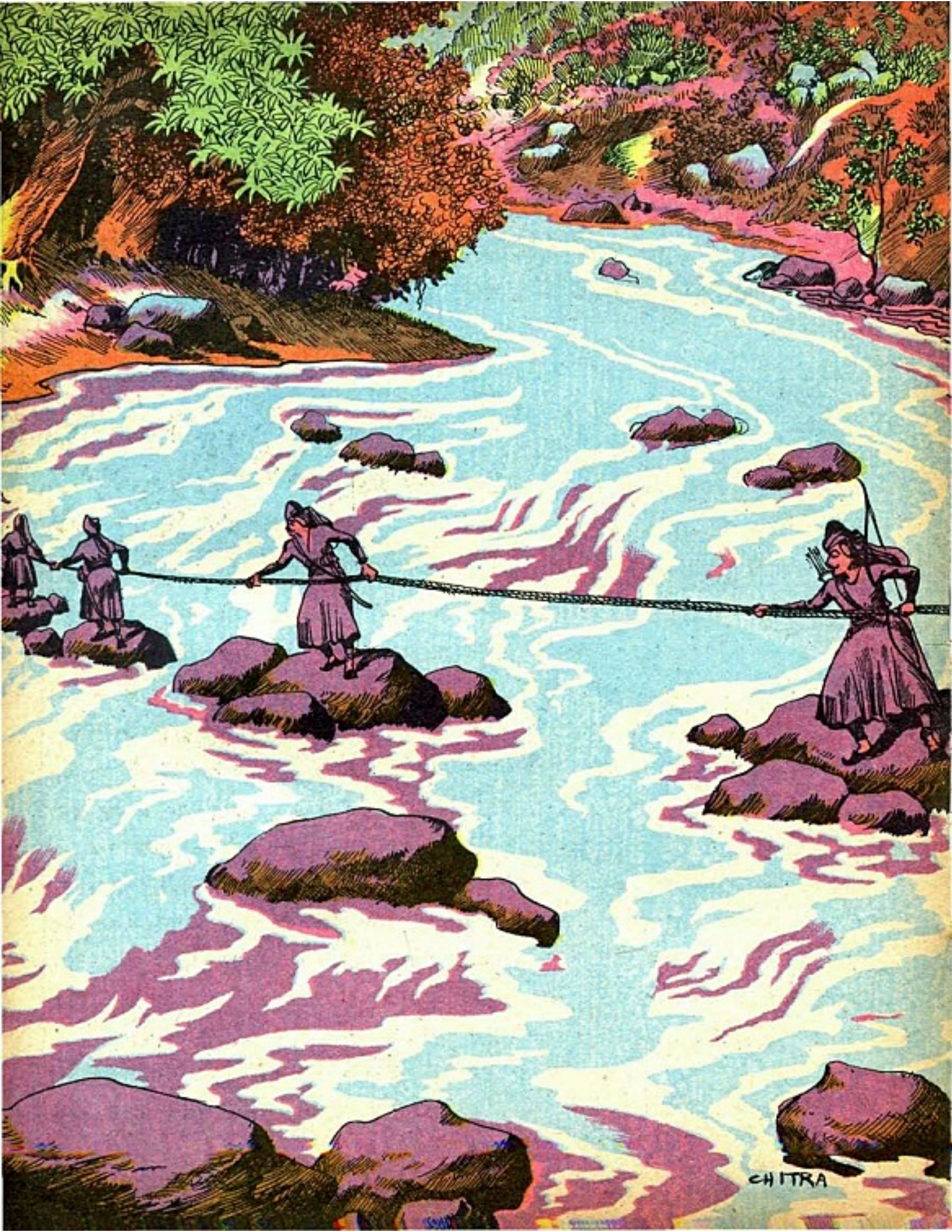
दूसरी दिशा की ओर चल रहे हैं। समरसेन सोच ही रहा था कि क्या किया जाय, तब सैनिकों में से एक बोला—"सेनापतिजी, इस नदी को पार करना कोई आसान काम नहीं है। हमें कोई दूसरा उपाय सोच लेना चाहिए!"

"हाँ, तुम ठीक कहते हो।" यों जवाब देकर समरसेन फिर किसी विचार में डूब गया। यदि कोई लंबा रस्सा जैसी चीज़ मिल जाय तो नदी पार करना कोई कठिन काम नहीं है। यही बात उसने सैनिकों से बताई, पर उनके सामने सवाल यह था कि उस जंगल के बीच उन्हें रस्सा कैसे मिल सकता है?

सैनिक समीप के पेड़ों के पास पहुँचे, उनसे लिपटी बेलों को तोड़कर एक मज़बूत रस्सा बनाया, उसके एक छोर को नदी के किनारे के एक मज़बूत पेड़ से बांध लिया और फिर दूसरा छोर पकड़कर एक-एक करके उस रस्से के सहारे नदी की धारा के बीच स्थित चट्टानों पर से उस पार चलने लगे।

थोड़ी देर में सब लोग सुरक्षित रूप में नदी के उस पार पहुँचे। समरसेन सैनिकों को सचेत कर समीप के एक ऊँचे टीले पर पहुँचा। उसके नीचे की घाटी में ज़्यादा

पेड़ न थे। पर थोड़ी दूर और आगे बढ़ने पर वह सारा प्रदेश घने वृक्षों से घिरा हुआ था।

समरसेन चारों ओर नज़र दौड़ाकर टीले पर से उतर आया। सैनिकों ने उसका अनुसरण किया। वहाँ घास पर अंकित पैरों के निशानों के आधार पर कुछ दूर चलकर घने वृक्षोंवाले वन के बीच पहुँचे।

हठात् उन्हें हाथी के चिंघाड़ों की भयानक आवाज़ सुनाई दी। सैनिकों ने भय कंपित हो अपने नेता की ओर सहमी दृष्टि से देखा। समरसेन सैनिकों को चेतावनी देते हुए तेजी के साथ जाकर

एक पेड़ पर लांघ गया। सैनिक भी उसके पीछे पेड़ पर चढ़ बैठे। इसके दूसरे ही क्षण हाथियों का एक झुंड घींकार करते उस प्रदेश में आ पहुँचा।

जंगल में इधर-उधर फैले दावानल से बचकर हाथी भागे जा रहे थे। उनके पैरों के आघात से जमीन हिल उठती थी, हरी-हरी दूब, पौधे और झाड़ियाँ उनके पैरों के नीचे कुचलकर चूर-चूर होती जा रही थीं।

पेड़ों पर बैठे समरसेन और उसके सैनिक हाथियों के झुंड को देख घबरा उठे। उन लोगों ने सोचा—'पेड़ पर चढ़ने में अगर पल भर की भी देरी हो जाती तो हम लोग भी हाथियों के पैरों के नीचे नाहक़ कुचल गये होते। आज हमारी क़िस्मत अच्छी थी, इसलिए हम लोग ज़िंदा बच रहे।

थोड़ी देर के अंदर हाथियों का सारा झुंड उस प्रदेश को छोड़ शीघ्र ही आगे चला गया। फिर भी समरसेन और उसके सैनिक पेड़ पर से उतरने में डर का अनुभव करने लगे।

हाथियों के चिंघाड़ों की आवाज़ जब बड़ी दूर चली गई और जब उन्हें इस बात का एहसास हुआ कि हाथी फिर से वापस लौटनेवाले नहीं हैं, तब समरसेन और उसके सैनिक डरते-डरते पेड़ पर से नीचे उतर आये। वे घबराये हुए चारों ओर दृष्टि दौड़ाते रहे, पर कहीं अगर किसी तरह की कोई आहट हो जाती तो एक दम थर-थर कांप उठते थे। इस बार फिर उन लोगों ने उस पगडंड़ी की खोज की, जिससे होकर वे यहाँ तक मानवों के पैरों के निशान पाकर चले आये थे, मगर उसका कुछ पता न चला। हाथियों के पैरों के नीचे कुचलकर सारा प्रदेश समतल हो गया था, सब के सामने यही सवाल खड़ा था कि अब क्या करना है? कोई हल न पाकर वे सब लोग चकित हो चारों तरफ़ दृष्टि दौड़ाने लगे। (और है)

धर्मात्मा

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन, आप जो कार्य कर रहे हैं, उसके संबंध में धर्म और अधर्म की बातें सोचना बेकार है। आप को खासकर सोचना तो यह चाहिए कि आप का काम सफल होगा या नहीं। सिंहपुर के राजा नरसिंहवर्मा जैसे धर्मात्मा ने भी विजय पाने की इच्छा से अधर्म की शरण ली। श्रम को भुलाने के लिए मैं आप को उनकी कहानी सुनाता हूँ, सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा: शोणपुर के राजा जयपुर के राजा के सामंत थे। शोणपुर का राज्य वैसे क्षेत्रफल में छोटा है, लेकिन उसे सारी सुविधाएँ सहज ही

बेताल कथाएँ

प्राप्त हैं। जयपुर के राजा जयदेव ने न केवल शोणपुर की रक्षा की, बल्कि उसके विकास में भी काफी योगदान दिया।

यही वजह है कि मणिपुर के राजा मणिमंत की नज़र उस पर पड़ी। उसने अचानक उस छोटे से राज्य पर हमला करके उसे अपने अधिकार में ले लिया।
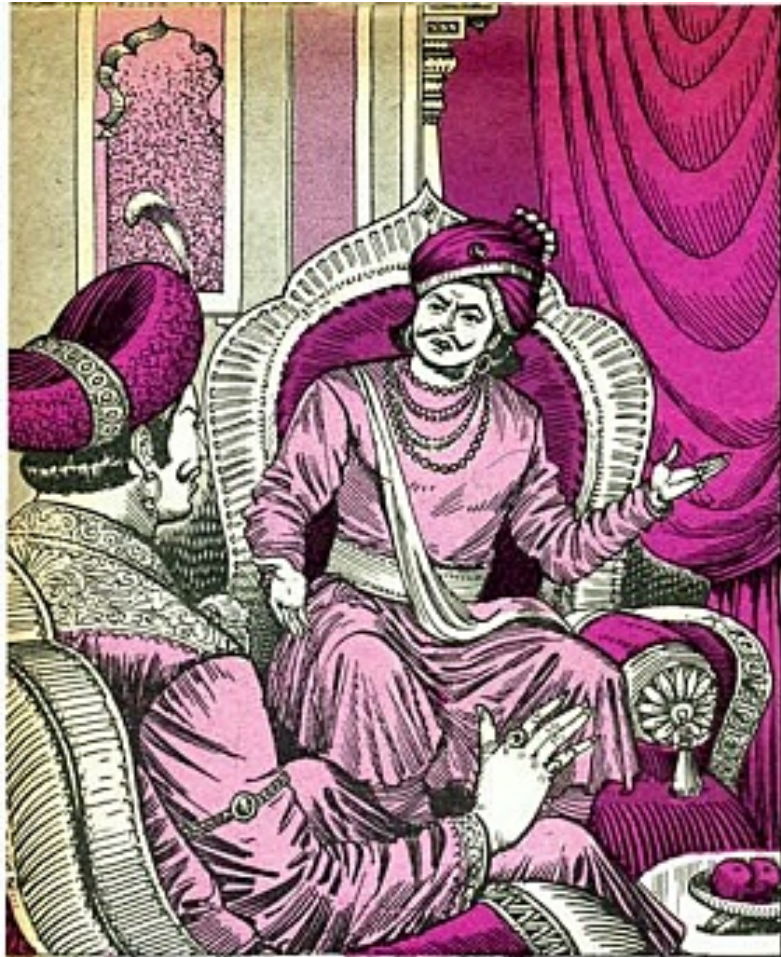
इस घटना के कारण राजा जयदेव बड़ी उलझन में फंस गये। शोणपुर की रक्षा करने की जिम्मेदारी उन पर जरूर है, मगर वे मणिमंत के साथ युद्ध करके उसे हराने की ताक़त नहीं रखते थे। इस वजह से उन्होंने अपने मंत्री की सलाह पर सिंहपुर के राजा नरसिंहवर्मा की मदद मांगी। जयपुर और सिंहपुर के बीच चिरकाल से मैत्री थी। नरसिंहवर्मा एक नामी धर्मात्मा थे। उन्होंने सोचा कि जयपुर और शोणपुर के सामने जो उलझनें पैदा हो गईं, उन्हें सुलझाना उनका कर्तव्य है। इसी भावना से उन्होंने जयपुर की सेनाओं के साथ अपनी सेना को मिलाकर मणिपुर पर चढ़ाई कर दी।

दोनों पक्षों के बीच दो दिन तक लड़ाई चलती रही, तब यह बात स्पष्ट हो गई कि मणिपुर की जीत निश्चित है। उस हालत में जयदेव ने नरसिंहवर्मा को एक कपट उपाय सूचित किया। इस पर नरसिंहवर्मा ने उसे अमल करने को मान लिया, दूसरे ही दिन मणिपुर राजा के साथ एक तरफ़ा समझौता कर लड़ाई के मैदान से अपनी सेनाओं को हटाया।

उस दिन रात को मणिपुर के सैनिक-शिविरों में जब सारे सैनिक और सेनापति विजय के उत्साह में दारू पीकर नाच रहे थे, तब जयपुर के सैनिकों के साथ सिंहपुर के सैनिकों ने भी अचानक हमला बोल दिया और मणिपुर के सैनिकों को बुरी तरह से मार डाला। साथ ही मणिपुर के राजा को बंदी बनाया।

इस प्रकार शोणपुर राज्य फिर से स्वतंत्र बन गया। इसके बाद जयपुर के

राजा की प्रशंसा पाकर नरसिंहवर्मा अपनी सेनाओं के साथ अपने देश को लौट गये।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा– "राजन, नरसिंहवर्मा धर्मात्मा कैसे हो सकते हैं? अगर धर्मात्मा हैं तो जयदेव के द्वारा बताये गये कपट उपाय को अमल करने के लिए वे मान सकते हैं? और इस तरह अपने यश को क्यों मिट्टी में मिला लेते हैं? क्या जयदेव के प्रति मैत्री की वजह से ऐसा किया? या मणिमंत जैसे ताक़तवर को कमज़ोर बनाने के ख्याल से? इस शंका का समाधान जानते हुए भी न देंगे तो आप का सिर फट जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "यह कहना उचित नहीं है कि नरसिंहवर्मा जयदेव की योजना को अमल करके धर्मच्युत हो गये हैं। धर्म का निर्णय परिस्थितियों के अनुरूप होना चाहिए। शत्रुओं से शोणपुर की रक्षा करना जयदेव का धर्म है। पर जयदेव अपने इस कर्तव्य को निभाने की शक्ति नहीं रखते थे, इस वजह से उन्होंने नरसिंहवर्मा की मदद मांगी। उसकी मदद करना नरसिंहवर्मा ने अपना फ़र्ज समझा। जब यह काम धर्म युद्ध के द्वारा संभव न हुआ, तब उन्होंने अधर्म युद्ध का सहारा लिया। अगर नरसिंहवर्मा जयदेव की युक्ति का तिरस्कार करके युद्ध न करते, तो वे मणिपुर के राजा के प्रति न्याय करनेवाले भले ही कहलाते, मगर जयदेव के प्रति अन्याय करनेवाले साबित होते। वास्तव में नरसिंहवर्मा ने जयदेव के प्रति अपना कर्तव्य निभाने के लिए ही इस काम में दखल दिया। असली बात तो यह है कि युद्ध करना ही अधर्म है। जैसे साम, दाम के द्वारा काम नहीं बनता तो दण्डोपाय का सहारा लेते हैं, वैसे ही धर्म युद्ध के जरिये धर्म का पालन संभव नहीं होता तो अधर्म युद्ध के द्वारा संपन्न करना गलत नहीं है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

साधु प्रकृति

एक बार एक राजा जंगल में शिकार खेलने गया। जंगल के एक छोर पर स्थित एक साधु के आश्रम में अपने आभूषण रखकर तब शिकार खेलने गया।

यह ख़बर मिलते ही दो चोर राजा के आभूषण हड़पने के ख्याल से साधु की कुटी में पहुँचे। साधु ने उन्हें देखते ही उनके मन की बात ताड़ ली, उसने खुद राजा के आभूषण लाकर मुस्कुराते हुए कहा—"भाइयो, ये आभूषण लेते जाओ।"

चोर साधु की ओर चकित होकर देखते रह गये। तब साधु ने उन लोगों को समझाया—"चोरी करना महान पाप है! मैं तुम लोगों को उस पाप का भागी नहीं बनाना चाहता हूँ, इसलिए मैं ये आभूषण तुम्हें खुद दे रहा हूँ। परलोक की बात खुदा जाने, मगर तुम लोग ये आभूषण चुराकर पकड़े जाओगे, तो राजा तुम्हारे सर कटवा देंगे। इसलिए मैं राजा से बताऊँगा कि मैंने ही ये आभूषण तुम लोगों को दिये हैं।" पल भर के लिए चोर साधू को ओर विस्मय के साथ देखते रहे, फिर उन आभूषणों को वहीं पर छोड़कर चले गये।
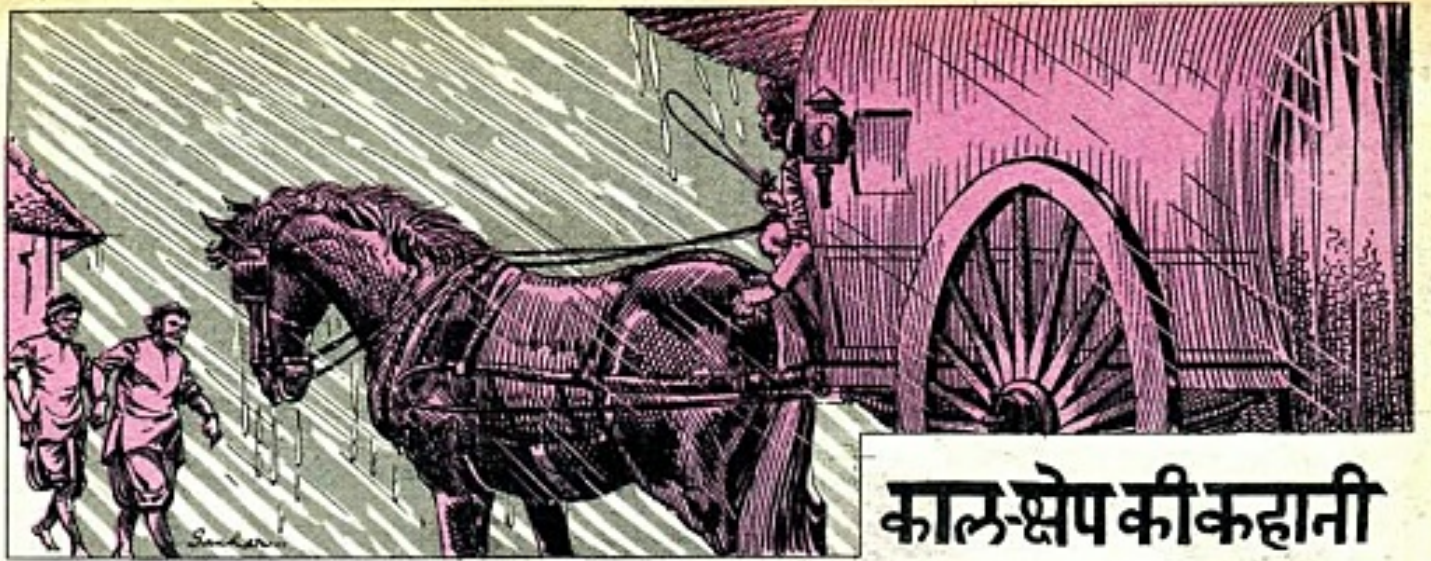
काल-क्षेप की कहानी

किसी सराय के कमरे में तीन आदमी बैठे थे। बाहर आंधी-वर्षा हो रही थी। उस वक़्त एक आदमी ने कहा–"मेरा नाम रमापति है। तुम दोनों अपने अपने नाम बता दो।" बाक़ी दोनों ने अपने नाम भूपति और गजपति बताये।

"इस बरसात की रात में हमें नींद न आवेगी। कोई काल-क्षेप हो जाय तो अच्छा होगा।" रमापति ने कहा। बाक़ी दोनों ने रमापति की बात मान ली।

"सब से पहले रमापति ने अपनी कहानी शुरू की : "उस दिन अचानक वर्षा प्रारंभ हुई। मेरे लिए वह गांव नया था। मैं लाचार होकर गांव के बाहर एक उजड़े मकान के छज्जे के नीचे छिप गया।

"मैं अच्छी तरह से गा सकता हूँ। अपना काल-क्षेप करने के वास्ते वायु के गर्जन के साथ होड़ लगाते गाने लगा।

उस वक़्त उस रास्ते से गुजरनेवाली एक घोड़ा गाड़ी मेरे सामने आ रुकी। मैं बराबर गाता रहा, थोड़ी देर बाद गाड़ी के रेशमी पर्दे हटाकर एक अमीर गाड़ी से उतर पड़ा, पानी में भीगते हुए मेरे नज़दीक़ आकर बोला–"शाबाश! तुम अच्छा गाते हो! मैं अपने परिवार को ससुराल में छोड़ आ रहा हूँ। तुम मेरे घर आकर अपने संगीत से मेरा मनोरंजन करो। मेरा वक़्त कट जाएगा।" यों कहकर अमीर मेरा हाथ पकड़कर गाड़ी के पास ले गये और मुझे गाड़ी में बिठाया।

मैं उस अमीर के साथ उनके घर पहुँचा। आधी रात तक गाकर उनका मनोरंजन किया, इसके बाद दोनों खाना खाकर लेट गये। अमीर आदमी के सो जाने के बाद मेरे हाथ जो कुछ धन लगा, गठरी बांधकर उस मकान से निकल पड़ा।"

संतोष सिंह

रमापति आगे बोला–"कुछ मूर्ख लोग वक़्त बिताने के नाम पर अपना अमूल्य समय न केवल बरबाद करते हैं, बल्कि नाहक़ ख़तरे भी मोल लेते हैं। असल में मैं कहना यह चाहता हूँ कि मैं जब खाना खाकर लौटा, तब देखता क्या हूँ कि भूपति मेरे धन की गठरी को अपने कपड़ों की गठरी के अन्दर छिपा रहा है। मैं यह सोचकर हँस पड़ा कि यह तो मेरे ही पेशेवाला आदमी है। अब मैं अपनी गठरी आप ले लेता हूँ।" यों कहते रमापति ने भूपति के कपड़ों की गठरी में से अपने धन की गठरी ले ली।

इस पर भूपति ने कोई आपत्ति नहीं उठाई। उसने अपनी कहानी यों शुरू की: "परसों रात को जब पानी बरस रहा था, तब मैं यहाँ से दस मील की दूरी के एक गाँव में था। मैं यह सोचकर सारा गाँव छान रहा था कि यहाँ पर मेरे हाथ कौन चीज़ लग सकती है, इतने में रात हो गई। उस गाँव के राम मंदिर में पुराण पाठ का कार्यक्रम था। इस वज़ह से उस गाँव के लोग खाना खाकर एक-एक करके राम मंदिर में जा रहे थे।

मैं गाँव के मुखिये के पिछवाड़े में एक भूसे के ढेर के पीछे छिपा बैठा था। मुखिये की माँ पुराण कथा सुनने जाने पर जोर दे रही थी, मगर मुखिया जाना नहीं चाहता था। "बेटा, हमारे साथ ये धन-संपत्ति आनेवाली नहीं हैं। आनेवाले हैं तो पाप और पुण्य ही! हम लोग भले ही पुण्य न करें, मगर पुराण कथा का श्रवण करने से हमारा नुक़सान ही क्या होता है?" यों कहकर मुखिये की बूढ़ी माँ ने मुखिये और उसकी बहू को भी पुराण पाठ सुनने के लिए मनवा लिया। वे लोग दर्वाजे पर ताला लगाकर चले गये।

इस बीच जोर की आंधी-वर्षा शुरू हो गई। उसके गर्जन के बीच मैंने मुखिये के मकान का ताला तोड़ा, इसलिए उसकी

आवाज़ किसी को भी सुनाई नहीं दी। मैं मकान के अन्दर चला गया, मेरे हाथ जो भी गहने लगे, गठरी बांधकर चुपके से उस अंधेरे में निकल पड़ा।"

यों भूपति ने अपनी कहानी समाप्त करते हुए कहा—"पुराण-पाठ के काल-क्षेप की वजह से मुखिये का घर लुट गया। मैं जानता हूँ कि मेरे गहनों की गठरी इस वक़्त गजपति के पास है। मैं अपनी गठरी वापस ले लेता हूँ।" यों कहकर भूपति ने गजपति की कमर में खोंसी गई अपनी गहनों की गठरी को ले लिया।

गजपति ने चुपचाप भूपति के हाथ गहनों की गठरी दे दी और उसने अपना अनुभव यों सुनाया :

"मैं उस दिन रात को एक और गाँव में था। मैं सभी मकानों के अंदर झांककर देख रहा था। इतने में बड़ी आंधी उठी। मैं एक मकान के चबूतरे पर पहुंचा और उसके भीतर से आनेवाली बातचीत सुनने लगा। एक औरत कह रही थी—"मुझे इस बड़े मकान में अकेली रहनी पड़ेगी। लगता है कि अब-तब में पानी बरसनेवाला है। इस अंधेरे में तुम जुआ खेलने क्यों जाते हो?"

"मुझे नींद नहीं आ रही है। मेरा काल-क्षेप कैसे होगा?" उस औरत का पति कह रहा था।

पत्नी के बहुत-कुछ समझाने पर भी पति ने न माना। उसने कहा—"मैं अभी जल्दी आ जाता हूँ। किवाड सटाकर बंद करो।

तुम तो कुंभकर्ण की नींद सोती हो। देर तक दस्तक देने पर भी तुम किवाड नहीं खोलती, भीतर चटकनी मत लगाओ।" यों समझाकर वह बाहर चला गया। तब मैं उसकी आँख बचाकर एक खंभे के पीछे जा खड़ा हुआ।

उस मकान के मालिक के चले जाने के बाद पानी बरसना शुरू हुआ। जुआ खेलने गया हुआ आदमी इस वर्षा में अभी लौटनेवाला नहीं, यों विचार कर उस मकान की मालिकिन के सोने के बाद मैं बिल्ली जैसे घर के अंदर घुस पड़ा, जो कुछ चांदी व सोने का माल मिला, गठरी बांधकर चुपचाप बाहर चला आया।

"असल में उस मकान के मालिक के काल-क्षेप का मामला मेरे लिए वरदान बन गया। मगर वह गठरी इस वक़्त मेरे पास नहीं है, रमापति ने उसे खिड़की के ऊपर के आले में छिपाते मैंने देख लिया है।" यों कहकर गजपति ने अपनी गठरी वापस ले ली।

तीनों ने जब अपनी-अपनी गठरी आप ले ली, तब यह कहते वे हँस पड़े—"हम तीनों चोर-चोर मौसेरे भाई हैं। कोई किसी से कम नहीं।"

इतने में उस कमरे के किवाड़ अचानक बंद हुए। उस सराय का अधिकारी खिड़की में से भीतर देखते बोला—"तुम तीनों ने अपना-अपना परिचय देते हुए अच्छे ढंग से अपना काल-क्षेप किया, इससे तुम्हारे खेल बंद हुए। मैंने तुम तीनों की कहानियाँ सुन ली हैं। तुम लोग चोरी के माल सहित रंगे हाथ पकड़े गये। सवेरा होने तक जैसे-तैसे अपना काल-क्षेप करो। सवेरा होने पर सीधे कारागार में जा सकते हो, वहाँ पर तुम लोगों का वक़्त बिताने के लिए इतना काम होगा कि तुम्हें दम लेने की फ़ुरसत तक नहीं मिलेगी। तुम लोगों का वहाँ पर अच्छा काल-क्षेप होगा।" यों कहते अधिकारी ने कमरे के किवाड़ों पर बाहर से ताला लगाया।

सच्चे रिश्तेदार

राम सहाय को शहर में नौकरी लगी। इस पर उसकी माँ शांताबाई, छोटा भाई सूर्य प्रकाश, छोटी बहन कमला की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। अपने पति के देहांत के बाद शांताबाई ने कई घरों में रसोई बनाकर अपने तीनों बच्चों का पालन-पोषण किया। वह कुछ धर्मात्मा-लोगों के घर भोजन पाकर पढ़ता रहा। उसे जानकी प्रसाद के घर हफ़्ते में दो दिन खाना मिलता था। वैसे जानकी प्रसाद कोई अमीर न था, पर उनके यहाँ खाने-पीने की कोई कमी न थी।

राम सहाय को आसानी से शहर में नौकरी मिली। वह चाहता था कि अपनी माँ तथा भाई-बहन को भी अपने साथ रख ले, मगर शांताबाई ने यह सोचकर नहीं माना कि शहर में ज्यादा खर्च होता है, इसलिए राम सहाय थोड़े से रुपये रखकर बाक़ी रुपये अपनी माँ को भेजता रहा। उस रक़म से शांताबाई ने न केवल अपने परिवार का ख़र्च चलाया, बल्कि थोड़े रुपये बचाकर घर के लिए आवश्यक सारी चीज़ें खरीद लीं। सूर्यप्रकाश कोई पेशेवर शिक्षा पाने लगा, कमला भी सीने-पिरोने का काम और संगीत सीखने लगी।

राम सहाय एक बार जब छुट्टी के दिन घर पहुँचा तो देखता क्या है, कोई धनी परिवार की महिला उसकी माँ से बातचीत कर रही है। शांताबाई ने राम सहाय को उसका परिचय कराकर कहा—"बेटा, यह तो तुम्हारे पिताजी की दीदी लगती है, यह अपनी कन्या के साथ तुम्हारा ब्याह करना चाहती है।"

उस दिन रात को राम सहाय ने अपनी माँ को समझाया—"माँ, आज तक जो

दुर्गा प्रसाद

लोग हमारे घर तक न पटके, वे अगर आज अपनी कन्या के विवाह का प्रस्ताव लेकर हमारे घर आते हैं, तो इसका मतलब है कि ये हमारे प्रति कोई विशेष प्रेम नहीं रखते, बल्कि वे मुझे अपना ही बनाकर आप से दूर करना चाहते हैं। मुझे यह रिश्ता बिलकुल पसंद नहीं है।"

राम सहाय ने इस प्रकार अपनी माता से ये बातें कहीं, जिससे उसकी फूफी भी सुन सके, फिर क्या था, सवेरे ही उठकर चुपचाप वह अपने गाँव चली गई!

एक हफ़्ते बाद जब राम सहाय छुट्टी पर घर आया, तब देखता क्या है, कोई सज्जन कुर्सी पर बैठकर अखबार पढ़ रहा है। इतने में शांताबाई मकान के भीतर से आई, बोली—"बेटा, ये हैं मेरे चचेरे भाई नागराज। ये अपनी बेटी के साथ तुम्हारी शादी करना चाहते हैं!"

राम सहाय ने झट कह दिया—"माँ, पहले कमला की शादी हो जाय, तब मेरी शादी की बात सोच लेंगे!" फिर नागराज से बोला—"नागराजजी, इस रूप में ही सही, आप को हमारी याद आ गई। मुझे बड़ी खुशी है। आप चार-पांच दिन हमारे घर बिताकर तब जाइये।"

"बेटा, मैं तुम लोगों को देखने आना ही चाहता था, लेकिन मुझे फ़ुरसत ही नहीं मिली। मुझे शहर में कोई जरूरी काम है। फिर मिलेंगे!" यों कहते उसी वक़्त नागराज उठकर चला गया।
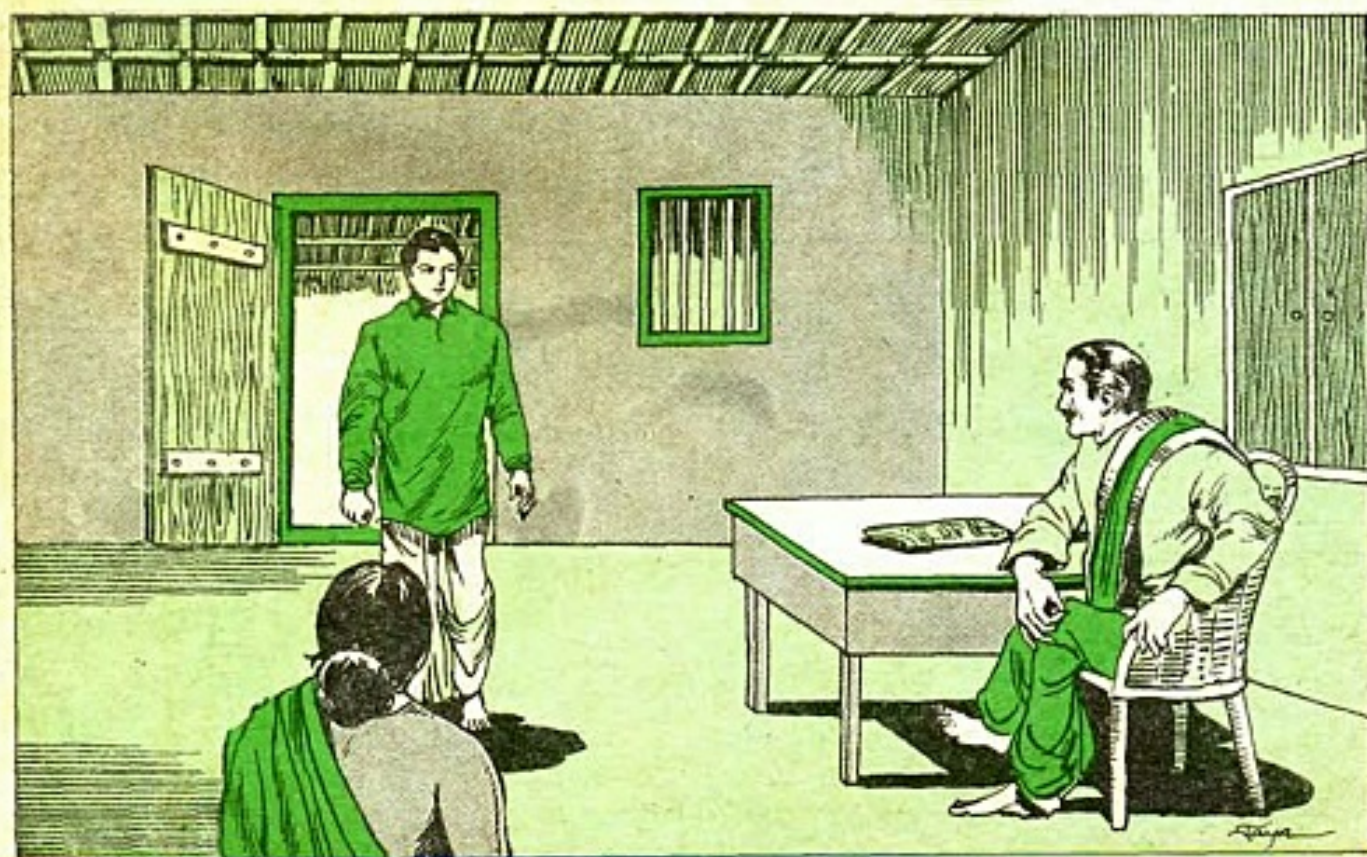
माघ महीने में शांताबाई की बहन की लड़की की शादी पक्की हुई। इस पर घर भर के लोग उस शादी में गये। शादी के दिन की रात को शांताबाई और उसके बच्चे एक कमरे में सोये। पर राम सहाय को नींद नहीं आई। आधी रात के वक़्त उसे किसी की बातचीत सुनाई दी। उसने अपनी माँ को जगाया और चुपचाप उस बातचीत को सुनने का संकेत किया। एक औरत कह रही थी—"अजी, तुमने हमारी लड़की की शादी के बारे में शांताबाई से अभी तक बात तक नहीं की!"

"छी, उस रसोइन के लड़के के साथ हम रिश्ता जोड़ ले? हमारी इज्जत क्या मिट्टी में मिल न जाएगी?" एक पुरुष का स्वर सुनाई पड़ा।

"तो क्या हुआ? लड़का तो देखने में सुंदर है। शहर में नौकरी करता है। खूब कमाता भी है। शादी के बाद हमारी लड़की अपना घर अलग बसवा लेगी।" औरत कह रही थी। इसके बाद शांताबाई के सामने कोई भी राम सहाय की शादी का प्रस्ताव रखता तो वह साफ़ बताने लगी—"हम अभी-अभी हमारे लड़के की शादी करना नहीं चाहते।"

एक दिन राम सहाय ने शहर से लौटकर कहा—"माँ, जानकी प्रसादजी कमला के वास्ते बढ़िया रिश्ता लाये हैं! लड़का बड़ा ही बुद्धिमान है। हमारी

मौसी के घर शादी में उस लड़के ने कमला को देखा है। उन्हीं लोगों ने कहला भेजा है कि जहाँ तक हो सके कम खर्च में ही शादी करे। जानकी प्रसादजी स्वयं कह रहे हैं कि शादी के खर्च के लिए रुपयों का वे खुद इंतजाम करेंगे।"

"बेटा, हम लोग जानकी प्रसाद की कृपा से इस हालत तक पहुँच सके हैं!" शांताबाई ने जानकी प्रसाद के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

"जी हाँ, माँ! जानकी प्रसाद की बेटी सीताबाई के साथ मैं शादी करूँ तो उनका ऋण हम थोड़ा-बहुत चुकानेवाले साबित होंगे, माँ!" राम सहाय ने कहा।

वास्तव में बचपन में लकवा मारने से सीताबाई लंगड़ी बन गई थी। फिर भी वह बड़ी बुद्धिमती थी। घर के सारे काम अच्छी तरह से संभालती है।

अपने बेटे के निर्णय पर शांताबाई बड़ी खुश हुई। उसने जानकी प्रसाद के घर जाकर अपने बेटे का निर्णय उसे सुनाया।

जानकी प्रसाद ने शांताबाई को समझाया—"बहन, लड़कपन की वजह से शायद राम सहाय जल्दबाजी में आकर यों कहता होगा! उसको समझाओ कि वह सोच-समझकर निर्णय कर ले।"

"भाई साहब, हमारे रिश्तेदारों में से कई लोगों ने राम सहाय के साथ अपनी कन्याओं को ब्याहना चाहा, मगर आज हमारी हालत को थोड़ी सुधरी हुई देख ये लोग शादी के प्रस्ताव लेकर हमारे पास आते हैं, ऐसे लोगों से मेरा बेटा चिढ़ता है। उसकी नज़र में वे ही लोग सच्चे रिश्तेदार होते हैं, जो क़दम-क़दम पर सहारा देने के लिए तैयार बैठे रहते हैं; उसने सोच-समझकर ही यह निर्णय लिया है, कृपया आप मान जाइये!" शांताबाई ने अनुरोध किया।

एक शुभ मुहूर्त में राम सहाय तथा सीताबाई की शादी संपन्न हुई। उनकी शादी के पहले कमला की शादी हो चुकी थी।
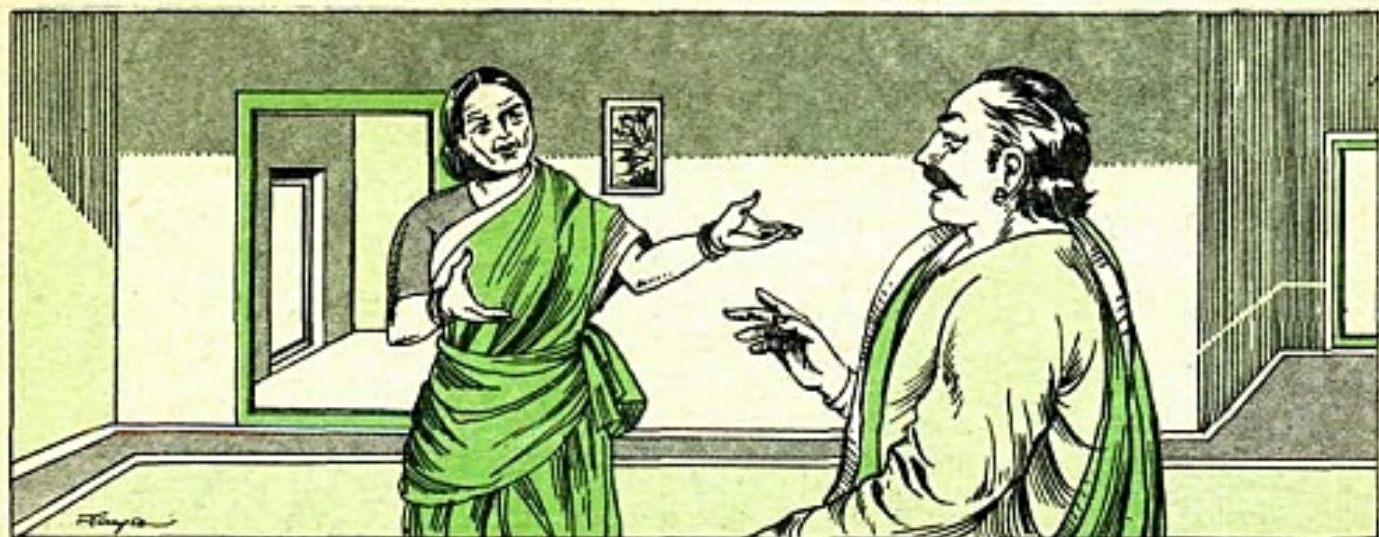
छोटे सेठ का शिष्य

ब्रह्मदत्त जब काशी राज्य पर शासन कर रहे थे, उन दिनों में एक वणिक परिवार में बोधिसत्व ने जन्म लिया और वे "छोटे सेठ" कहलाये। वे बुद्धिमान और शकुन शास्त्र के ज्ञाता थे।

एक दिन छोटे सेठ राज-दरबार में जा रहे थे, तब रास्ते में एक मरे हुए चूहे को देख बोले—"एक होशियार युवक इस मरे हुए चूहे के साथ व्यापार करके बड़ा धनी बन सकता है और वह स्वयं अपनी शादी कर सकता है।"

उस रास्ते चलनेवाले एक युवक के कानों में ये बातें पड़ीं। वह एक अच्छे वंश का था, मगर गरीब था। छोटे सेठ की बात पर उसका अपार विश्वास था। इसलिए उस मरे हुए चूहे को ले जाकर किसी दूकान में बिल्ली के आहार के वास्ते एक पैसे में बेच दिया।

एक पैसे का गुड़ खरीद कर घड़े भर पानी ले वह युवक जंगल के रास्ते में जा बैठा। जंगल से फूल चुनकर लानेवाले मालियों को थोड़ा-थोड़ा गुड़ और पीने के लिए पानी देकर बदले में उनसे मुट्ठी भर फूल लिये, बाद को वे फूल बेचकर उसने पैसे बनाये।

दूसरे दिन थोड़ा और ज्यादा गुड़ लेकर पानी के साथ वह युवक फिर उसी जगह जा बैठा। आज मालियों ने उसे फूलों के साथ फूलों के पौधे भी दिये। इस तरह उसने कुछ ही दिनों में आठ चाँदी के सिक्के कमाये।

एक दिन आंधी-वर्षा हुई। राजा के बगीचे में सूखी डालियाँ और पत्ते ज्यादा मात्रा में गिर गये। बगीचे का माली सोच रहा था कि बगीचे को कैसे साफ़ किया जाय, तब उस युवक ने वहाँ जाकर

जातक कथा

उसे समझाया कि सूखी डालिया और कंटीली टहनियाँ उसे दी जाय तो वह बगीचे को साफ़ करेगा! इस पर माली ने झट मान लिया।

इसके बाद वह युवक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ बहुत सारे बच्चे खेल रहे थे। उन्हें गुड़ देकर बगीचे में बुला ले गया, उनके द्वारा बगीचे में टूट कर गिरी हुई लकड़ियों तथा कंटीली टहनियों को एक जगह इकट्ठा कराया और उन्हें बगीचे के फाटक के पास पहुँचवा दिया।

उस वक़्त राजा का कुम्हार उधर से आ निकला, उसने बगीचे के पास लकड़ियों का ढेर देख मिट्टी के बर्तन जलाने के लिए सौदा किया। इस तरह उस युवक को छब्बीस चांदी के सिक्के और घलुवे में कुछ मिट्टी के बर्तन भी मिले।

तब उसके दिमाग में एक विचार आया, वह नगर के फाटक के प्याऊ के समीप पहुँचा और पांच सौ घसियारों को पानी पीने को दिया, उन लोगों ने उसकी मुँह मांगी मदद देने की बात कही। युवक ने बताया कि ज़रूरत पड़ने पर वह उन लोगों से मदद मांग लेगा।

एक बार उस युवक को एक व्यापारी के द्वारा मालूम हुआ कि दूसरे दिन उस नगर में एक घोड़ों का सौदागर अपने पांच सौ घोड़ों के साथ आनेवाला है। उसी वक़्त वह युवक उन घसियारों से मिला और पूछा—"कल तुम लोगों को मुझे घास का एक-एक गट्ठर देना होगा। मेरे सारे गट्ठर बिकने तक तुम लोगों को कहीं भी घास नहीं बेचना है।" उन लोगों ने युवक की शर्त मान ली और घास के गट्ठर लाकर उस युवक के घर डाल दिया।

दूसरे दिन सौदागर अपने पांच सौ घोड़ों के साथ वहाँ पर आ पहुँचा। उस दिन उसे अपने घोड़ों के लिए कहीं भी घास न मिली थी, इसलिए उस युवक के यहाँ से पांच सौ घास के गट्ठर ख़रीद कर उसे एक हज़ार सिक्के दिये।

थोड़े दिन बीत गये। अपने परिचित एक नौका व्यापारी के द्वारा उस युवक को यह खबर मिली कि एक बहुत बड़ी नाव बंदरगाह में आ लगी है। इस पर उसने एक बढ़िया उपाय किया। इस उपाय के अनुसार आठ सिक्के देकर एक गाड़ी को किराये पर ले लिया, तब बंदरगाह में पहुँचा। तब एक अंगूठी को अग्रिम के रूप में देकर नाव खरीदी। इसके बाद तीन दरबानों को नियुक्त कर हुकम दिया कि अगर कोई व्यापारी आये, तो उसके पास बुला ले आवे।

इस बीच नाव के बंदरगाह में लगने की खबर पाकर काशी के एक सौ व्यापारी माल खरीदने आये। पर उन्हें मालूम हुआ कि इसके पहले ही सारा माल किसी युवक ने खरीद लिया है, तब वे व्यापारी उस युवक के पास आये।

युवक ने उनके हाथ नाव के सारे माल के साथ वह जगह भी दो-दो हजारों में बेचकर दो लाख कमाये।

इसके बाद उस युवक ने छोटे सेठ के पास जाकर उन्हें अपनी गाढ़ी कमाई के एक लाख सिक्के दिखाये।

छोटे सेठ ने प्रसन्न होकर उस युवक से पूछा—"बेटा, तुम्हें इतना सारा धन कैसे प्राप्त हुआ?"

"महानुभाव, आपका उपदेश पाकर चार महीनों के अंदर मैंने यह सारा धन कमाया है।" इन शब्दों के साथ उस युवक ने मरे हुए चूहे को एक पैसे में बेचने की घटना से लेकर आदि से अंत तक सारा वृत्तांत सुनाया।

सारी बातें सुन छोटे सेठ ने सोचा—"ऐसे होशियार युवक को दूसरों के हाथ नहीं पड़ने देना चाहिए।" उन्होंने विवाह योग्य अपनी कन्या के साथ उस युवक की शादी की और अपनी सारी संपत्ति उसके हाथ सौंप दी। छोटे सेठ के मरने के बाद उस युवक को 'सेठ' की उपाधि प्राप्त हुई।

अदृश्य बुद्ध

बुद्ध का ज्ञाति देवदत्त बुद्ध के शिष्य के रूप में अभिनय करते हुए उनसे जलता था। मगध के राजकुमार अजातशत्रु और देवदत्त गहरे दोस्त थे। अजातशत्रु के पिता बिंबसार को मार डालने में देवदत्त ने अजातशत्रु को प्रोत्साहन दिया। उसका विश्वास था कि अजातशत्रु के राजा बनने पर उसे ऊँचा पद मिलेगा।

देवदत्त के प्रोत्साहन से अजातशत्रु ने एक दिन मौक़ा देख बिंबसार के सोने के कमरे में गुप्त रूप से प्रवेश किया। सोनेवाले राजा के निकट जाकर छुरी निकाली और उन्हें मारने को हुआ।

संयोग से उस वक़्त एक राजसेवक उस कमरे में आया और वह जोर से चिल्लाया। इस पर अजातशत्रु के हाथ की छुरी फिसलकर नीचे गिर पड़ी। राजा के अंगरक्षक दौड़े-दौड़े वहाँ पर आ पहुँचे। फिर क्या था, अजातशत्रु बड़ी आसानी से बन्दी बना।

अजातशत्रु ने मान लिया कि देवदत्त ने उसे यह दुष्कार्य करने को प्रेरित किया है। मंत्रियों ने सलाह दी कि अजातशत्रु को सजा मिलनी चाहिए। लेकिन राजा ने कहा–"मैं बूढ़ा हो चुका हूं! मुझे राजा के पद से मुक्त होने दीजिए! मेरा पुत्र जब राजा बनेगा, तब उसके अन्दर आत्मविश्वास पैदा हो जाएगा और दुष्ट लोग उसे ऐसी प्रेरणा नहीं दे सकेंगे।"

अजातशत्रु ने अपने पिता के पैरों पर गिरकर अपनी करनी के लिए माफ़ी मांगी और बताया कि उनकी इच्छा के योग्य बनने का प्रयत्न करेगा। इस पर बिंबिसार ने अपना राज्य अजातशत्रु के हाथ सौंप दिया। इसके बाद अजातशत्रु देवदत की उपेक्षा करके बुद्ध के उपदेश सुनने लगा। उसने बौद्ध और जैन दोनों मतों का समान रूप से आदर किया।

अजात शत्रु के अन्दर जो हृदय परिवर्तन हुआ, उसे देख देवदत्त निराश हुआ, अब उसने खुद बुद्ध को मार डालने का निश्चय किया। बुद्ध शाम के वक्त एक पहाड़ी घाटी में टहला करते थे। एक दिन देवदत्त ने पहाड़ के ऊपर से बुद्ध पर एक बड़ी चट्टान को लुढ़का दिया।

उसी वक्त एक चट्टान अपने आप नीचे लुढ़कते बीच रास्ते में पहली चट्टान से टकरा गई और उसके लुढ़कने की दिशा को बदल डाला। इस पर दोनों चट्टानें बुद्ध से चंद गज दूरी पर गिर गईं। इससे बुद्ध ख़तरे से तो बच गये, मगर उनके एक पैर में एक नुकीला पत्थर चुभ गया।
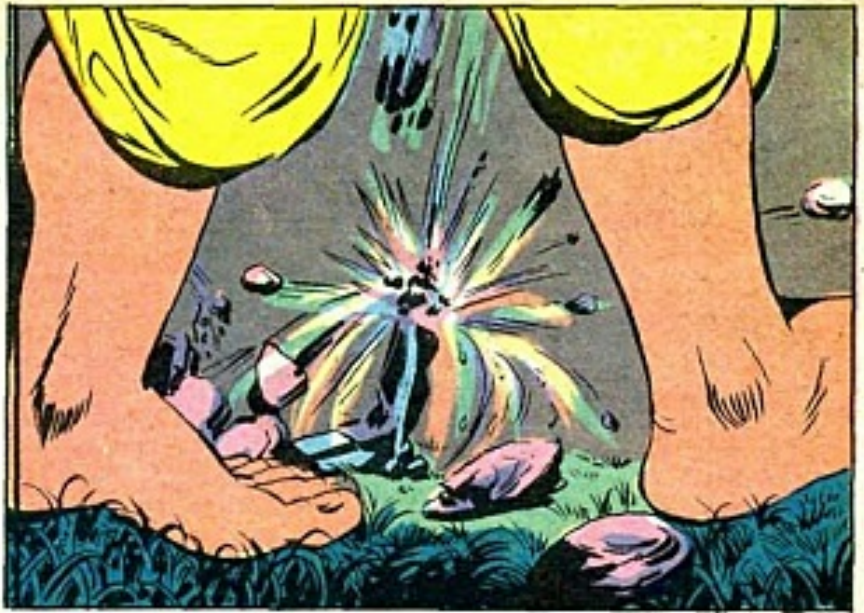
इसके बाद देवदत्त ने नीलगिरि नामक हाथी को पालनेवाले एक महावत के साथ मिलकर षड़यंत्र किया। वह हाथी मनुष्यों को कुचलने की बुरी आदत रखता था नीलगिरि को नशीले पदार्थ पिलाये गये। बुद्ध जब प्रधान सड़क पर आनेवाले थे, तभी उन दोनों ने यह काम किया।

नीलगिरि जब खूब नशे में आ गया, तब उसे सड़क पर छोड़ दिया गया। उसे देख सड़क पर चलनेवाली जनता तितर-बितर हो गई। उस वक्त बुद्ध अपने शिष्यों के साथ उसी रास्ते पर चले आ रहे थे। शिष्य बुद्ध को बचाने आगे आने को हुए, लेकिन बुद्ध ने उन्हें पीछे ढ़केल दिया और वे आगे आये।

उस भगदड़ में एक माता का शिशु उसकी कांख से नीचे गिर गया। हाथी उस शिशु के नज़दीक पहुँचा। भागनेवाली जनता चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थी कि वह छोटा शिशु नीलगिरि के पैरों के नीचे कुचल दिया जाएगा।

बुद्ध हठात् तेजी से चलकर आये और उस शिशु के आगे खड़े हो गये। उसी समय हाथी भी वहाँ पर आ पहुँचा। सब लोगों ने सोचा कि वह दुष्ट हाथी बुद्ध और उस शिशु को कुचल देगा। लेकिन आश्चर्य की बात थी कि वह हाथी उनके सामने आकर चुपचाप खड़ा रह गया।

बुद्ध ने हाथी को देख कहा—"नीलगिरि, शांत हो जाओ! सौम्य और अच्छा बन जाओ!" हाथी ने इतमीनान से बुद्ध के आगे घुटने टेक दिये, मानो वह बुद्ध से आशीर्वाद पाना चाहते हो। बुद्ध ने उसके शरीर पर हाथ फेरा। जनता ने कभी ऐसी घटना नहीं देखी थी, तब जाकर उन्हें मालूम हुआ कि बुद्ध कैसे महान पुरुष हैं।

धनी धोखेबाज

रामगुप्त एक लखपति था। पर अव्वल दर्जे का कंजूस था। ख़ासकर मेहनत-मजूरी करनेवालों को न्यायपूर्वक जो मजूरी देनी है, उसके भी देते वह छटपटा उठता।

दिन भर रामगुप्त के घर बगीचे का काम करके शाम के वक़्त घर लौटते किशन ने अपनी मजूरी मांगी। इस पर रामगुप्त ने कहा कि उसके पास पांच रुपये का नोट है, छुट्टे पैसे नहीं हैं, इसलिए वह एक रुपया देकर पांच रुपये का नोट ले ले।

किशन ने बताया कि उसके पास एक भी कौड़ी नहीं है। इस पर रामगुप्त ने समझाया कि वह कल आकर मजूरी ले! तब किशन ने अपनी हालत बताई–"सरकार! आज मजूरी मैं न ले जाऊँ तो मेरे घर चूल्हा तक न जलेगा! अलावा इसके सब लोग मुझे एक दिन की मेहनत के लिए पांच रुपयों की मजूरी देते हैं।" रामगुप्त ने न माना।

इस बीच वहाँ पर मोहनगुप्त का लड़का वीरभद्र आ पहुँचा। मोहनगुप्त एक करोड़पति है। रामगुप्त ने वीरभद्र से पांच रुपये के छुट्टे मांगे! वीरभद्र ने बताया कि उसकी जेब में इस वक़्त चार ही रुपये हैं। बाकी एक रुपया कल देगा। तब लाचार होकर रामगुप्त ने वीरभद्र से चार रुपये लेकर किशन को दे दिया। इसके बाद वीरभद्र ने एक रुपया कभी रामगुप्त को नहीं दिया। रामगुप्त की समझ में न आया कि वीरभद्र से एक रुपया कैसे वसूल करे? इस पर रामगुप्त जब तब यह सोचकर पछताता रहता–"काश! वह एक रुपया किशन को ही दे देता तो क्या ही अच्छा होता?"

अड़ोस-पड़ोस

शंकर और केशव बचपन के दोस्त थे। दोनों ने पढ़ाई पूरी करके शहर में नौकरियाँ पा लीं। मकान किराये पर लेकर अपने परिवारों के साथ रहने लगे। मगर दोनों के घर एक मुहल्ले में न थे।

शंकर दूसरों के साथ हिल-मिलना जानता न था, मगर केशव यह बात अच्छी तरह से जानता था कि दूसरों के दिल को कष्ट पहुँचाये बिना अपना काम कैसे साधना है।

शंकर जिस मुहल्ले में बसा था, वहाँ के लोग हमेशा ऐसा व्यवहार करते थे, मानो वे लोग दूसरों से कहीं ऊँचे स्तर पर अपनी जिंदगी बसर करते हैं, वे लोग सदा शंकर के सामने अपने बड़प्पन की डींग मारते थे। इससे शंकर को बड़ी खीझ होती थी। उनकी पत्नियाँ भी कुछ ऐसी ही प्रकृति की थीं। इस कारण शंकर की पत्नी सहन नहीं कर पाती थी। इस वजह से उन लोगों के बीच छोटी-मोटी बातों को लेकर झगड़े-फिसाद शुरू हो गये! शंकर तंग आ गया। मगर सारी सुविधाओं से पूर्ण मकान को छोड़ दूसरे मकान में जाने को उसका मन नहीं मानता था। उसका दोस्त जिस मकान में रहता था, उसमें सुविधाएँ कम थीं, फिर भी वह अपना मकान बदलता न था, कारण शहर में किराये के मकान मिलना भी कठिन था।

एक बार शंकर ने यह बात केशव को बताई। केशव सारी बातें सुन हँस पड़ा और बोला—"दोस्त, इस मामले में तुम्हें दुखी होने की कोई जरूरत नहीं है। कहना होगा कि तुम्हारे पड़ोसवालों का व्यवहार तुम्हारे साथ बड़ा अच्छा है! उनके साथ मधुर व्यवहार करना बड़ा सरल है! थोड़े दिनों के लिए हम लोग अपने-अपने मकान

कुमारी सरोजा गुप्ता

आपस में बदल लेंगे। तब हमें मालूम हो जाएगा कि मेरा पड़ोस तुम्हारे लिए और तुम्हारा पड़ोस मेरे लिए कैसा रहेगा?"

शंकर ने सोचा कि सुविधाएँ कम होने पर भी केशव के पड़ोसी लोग भले आदमी होंगे। क्योंकि उसने कभी अपने पड़ोसियों के बारे में कोई शिकायत नहीं की, यों विचारकर वह अपने दोस्त के साथ मकान बदलने को एक दम तैयार हो गया।

आखिर दोनों ने अपने अपने मकान बदल लिये। शंकर जब केशव के मकान में पहुँचा, तब एक सप्ताह के अन्दर उसने ऐसा अनुभव किया कि वह जिस मकान को छोड़कर आया है, वह इससे कहीं अच्छा है और वहाँ के पड़ोसी भी अच्छे हैं। पर अब उसके पड़ोसियों की आमदनी नहीं के बराबर है। अड़ोस-पड़ोस के बच्चे शंकर के बच्चों के हाथों में जो भी खान की चीज़ें होतीं, ज़बर्दस्ती खींचकर ले जाते थे। अड़ोस-पड़ोस की महिलाएँ शंकर की पत्नी से हर चीज़ उधार मांगकर ले जाती थीं, कभी लौटाने का नाम तक नहीं लेती थीं। इसी तरह से शंकर से भी उधार लेनेवाले कभी लौटाते न थे।

आखिर पड़ोसियों से तंग आकर शंकर और उसकी पत्नी ने उधार देना बंद किया। दूसरे ही दिन से अड़ोस-पड़ोस के लोग उनके दुश्मन बन बैठे। शंकर को उसकी ज़िंदगी नरक तुल्य मालूम होने लगी।
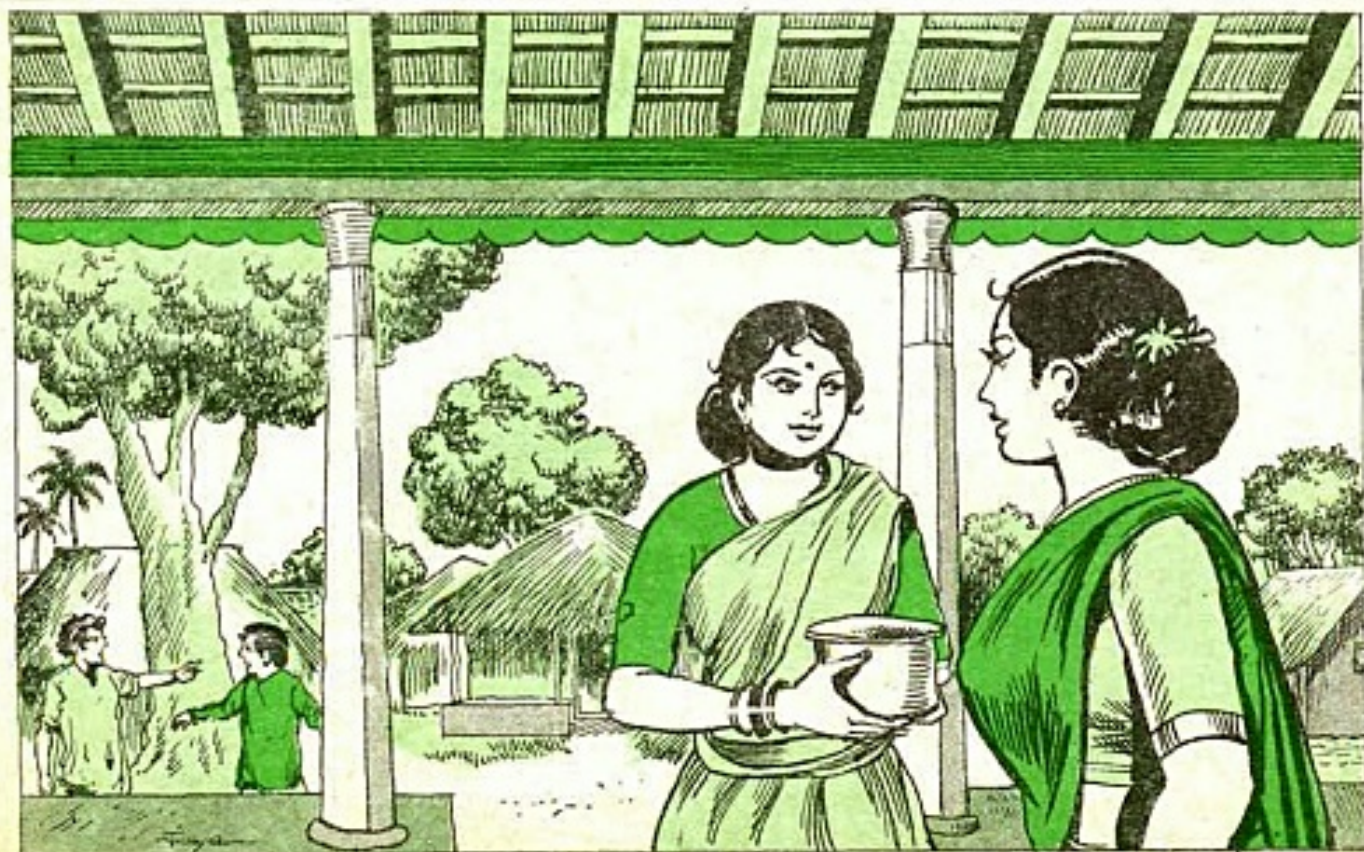
शंकर ने केशव से मिलकर अपनी मुसीबतें सुनाईं। लेकिन जो पड़ोसी शंकर के साथ रुष्ट थे, वे केशव के घनिष्ट मित्र बन गये थे। इसे देख शंकर अचरज में आ गया।

केशव के घर से सब लोगों के जाने के बाद शंकर से उसने कहा—"शंकर, तुम तो लोगों के साथ व्यवहार करना बिलकुल नहीं जानते। अड़ोस-पड़ोसियों के साथ मैत्री पूर्ण व्यवहार करना भी एक कला है, आचरण में यह कोई मुश्किल की बात भी नहीं है। तुम यहाँ के लोगों से तंग आकर भाग गये, मगर मुझे देखो, मैं कैसे उन लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करता हूँ? ये लोग अपने बड़प्पन की डींग हांकते हैं! मैं इस पर कोई आपत्ति नहीं उठाता। इस वजह से मुझ पर उनका विश्वास जम जाता है। जब मुझ पर उनका विश्वास जम जाता है, तब उनकी गलतियों को उन्हें स्वीकार करने लायक़ बनाने के लिए कोई सरल मार्ग ढूंढ़े जा सकते हैं न? अलावा इसके उन लोगों के डींग हांकने से हमारा कोई नुक़सान नहीं होता। वे लोग अपना बड़प्पन जताने के लिए मेरे बच्चों को भेंट व उपहार देते हैं! मेरी मदद करते हैं! मेरी पत्नी ने अड़ोस-पड़ोस की महिलाओं के साथ दोस्ती कर ली है। उन्हें खुश करने में हमारी हानि ही क्या होती है? किसी भी ज़रूरत के वक़्त अड़ोस-पड़ोस के लोग कैसे हमारा हाथ बटाते हैं, इसका तुम्हें जरा भी अनुभव नहीं है।

"अब रही तुम्हारे पड़ोसियों की बात! अगर तुमने पहले ही वहाँ के लोगों की हालत जान ली होती तो उन्हें कभी उधार न देते! उल्टे उन्हीं लोगों से तुमने उधार मांग लिया होता, तुमने पहले उधार देकर बाद को वापस न देनेवालों से दुश्मनी मोल ली। अड़ोस-पड़ोसवालों को समझे बिना उनके साथ सद्भाव पूर्ण संबंध स्थापित नहीं कर सकते, इसी में हमारी होशियारी है!"

बाड़ा और घास

एक राजा के सामने एक साथ दो समस्याएँ पैदा हो गईं। क़िले की पुरानी दीवार उजड़ती जा रही है। उसकी मरम्मत करानी होगी। साथ ही देश में चोरों का बोल-बाला बढ़ता जा रहा है। उस पर काबू रखना है। लेकिन पहले कौन-सा काम हाथ में ले, यही सोचते राजा छद्मवेष में शाम के समय टहलते एक खेत के पास पहुँचे।

उस खेत में फसल और घास खिचड़ी जैसी मिली हुई थी। पर किसान उस पर ध्यान दिये बिना बड़ी लगन के साथ बाड़ा बनवा रहा था। राजा को आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा–"भाई, तुम पहले घास न निराकर बाड़ा क्यों बनवा रहे हो?"

किसान ने राजा की ओर एडी से लेकर चोटी तक देखा, तब हँसकर बोला– "घास तो रसोई घर का खरगोश है! वह जाएगा ही कहाँ? लेकिन बाड़ा न लगवा लूं तो सारी फसल ख़तम हो जाएगी!" फिर क्या था, राजा की समस्या हल हो गई। उन्होंने दूसरे ही दिन क़िले की दीवार बनाना शुरू किया।

राज्य की खोज

मालव देश में किसी जमाने में सुदर्शन नामक एक युवक रहा करता था। वह देखने में कामदेव जैसा सुंदर था, पर गरीब था। उसका सारा बचपन काशी में बीता, दिल लगाकर उसने शिक्षा पाई। पढ़ाई समाप्तकर अपने देश को लौटा।

रास्ते में जहाँ-तहाँ मंजिल तै करते आखिर सुदर्शन एक रात को पुरंदर नामक एक छोटे राज्य में पहुँचा। उस नगर में पहुँचते ही अंधेरा फैल गया। उसने सोचा कि इस अंधेरे में इधर-उधर क्यों भटके? तब वह सीधे राजमहल में पहुँचा और बोला—"महाराज, मैं परदेशी हूँ! इस जून को अगर आप मेरे खाने और ठहरने का इंतजाम कर सकें तो कल सुबह मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा।"

पुरंदर देश का राजा उस युवक की सुंदरता और हिम्मत पर खुश हुआ और उसने उसके खाने व ठहरने का इंतज़ाम किया। जब सुदर्शन स्नान करने गया, तब रानी ने राजा से कहा—"महाराज, यह युवक वैसे साधारण पोशाक पहना हुआ है, मगर मुझे ऐसा लगता है कि कहीं यह छद्मवेष में घूमनेवाला किसी चक्रवर्ती का पुत्र तो नहीं! आप कृपया इसका पता लगाइये, अगर संभव हुआ तो हम राजकुमारी का विवाह इसके साथ करेंगे।"

"छद्मवेष में घूमनेवाला व्यक्ति कभी सच्ची बात बतायेगा? मंत्री से पूछकर तब हम किसी निर्णय पर पहुँचेंगे।" राजा ने कहा।

मंत्री ने सारी बातें जानकर कहा—"महाराज, यह कौन बड़ी बात है? यह युवक राज परिवार का है, या नहीं, इसका पता तो बड़ी आसानी से लगाया जा सकता है। लेकिन एक रात में इसका

पता लगाना मुश्किल है। इसलिए आप इसको कम से कम दो दिन रोक लीजिए।"

खाने के वक़्त राजा ने सुदर्शन से कहा—"बेटा, तुमने कहा कि तुम कल सुबह ही यहाँ से चले जाना चाहते हो, लेकिन ऐसा नहीं हो सकता। कल हमारी पुत्री इंदुमती की जन्मगांठ है। कल भी तुम यहीं रहो, परसों जा सकते हो।"

इस बीच मंत्री ने सुदर्शन के वास्ते एक कमरे में साधारण बिछौना बिछवा दिया। उसने एक पहरेदार को बुलवाकर समझाया—"अरे, सुनो, तुम रात भर जागते हुए इस बात की निगरानी रखो कि हमारा मेहमान आराम से सोता है या नहीं!"

सुदर्शन खाने के बाद अपने सोनेवाले कमरे में पहुँचा। दर्वाजे पर चटकनी लगाकर लेटने के ख़्याल से बिछौने पर बैठकर अपना कुर्ता खोल दिया, तब उसकी जेब में से दो-तीन मुट्ठी भर कच्चे चने बिस्तर और फ़र्श पर छितर गये।

असल में बात यों हुई कि सुदर्शन जब पुरंदर नगर की ओर बढ़ रहा था, तब रास्ते के किनारे चने के खेत मिले। सुदर्शन गरीब था, भविष्य का ख़्याल रखता था। इसलिए सोचा, अगर किसी जून खाना न मिले तो चने खाकर पेट भरा जा सकता है। इस ख़्याल से चने

तोड़कर दोनों जेबों में भर लिया। इसके बाद वह यह बात भूल गया।

कमरे में चनों के बिखर जाने से सुदर्शन के सामने बड़ी उलझन पैदा हो गई। वह साधारण आदमी है, फिर भी राजा ने उसका आतिथ्य दिया। इन चनों को देखकर अगर कल नौकर राजा को यह समाचार दे तो उसके प्रति राजा के मन में जो आदर का भाव है, वह जाता रहेगा। इसलिए सुदर्शन ने बिस्तर पर गिरे सारे चनों को चुना और दुपट्टे को भी अच्छी तरह से झाड़ दिया।

इसके बाद कमरे में बिखरे सारे चने चुन लिये। यह काम करते आधी रात

बीत गई। अब उन चनों को भी जेब में रखना खतरे से खाली नहीं, इसलिए भूख न रहने पर भी वह एक-एक करके सारे चने खाने लगा। उसके लेटते-लेटते रात का तीसरा पहर हो गया।

दूसरे दिन सवेरे मंत्री ने पहरेदार को बुलाकर पूछा–"सुनो, रात को हमारा मेहमान जागता तो नहीं रहा? ठीक से सो गया है न?"

"हुजूर! रात भर उन्हें भी नींद नहीं और मैं भी जागता रहा। सारी रात वे कमरे में चक्कर लगाते रहे। बिछौना झाड़ने की आवाज़ भी मुझे सुनाई दी। तीसरे पहर के समय में सो गया। मैं नहीं जानता कि वे कब सोये?" पहरेदार ने जवाब दिया।

मंत्री ने उसी वक़्त राजा के पास जाकर कहा–"महाराज, हमारे अतिथि बड़ा ही कोमल स्वभाव का है। हमने जिस तरह के बिछौने का इंतजाम किया, उस पर अगर कोई साधारण व्यक्ति होता तो आराम से सो जाता। यह तो महान भोगी मालूम होता है। यह जरूर किसी चक्रवर्ती का पुत्र होगा!"

सुदर्शन रात भर चने खाता रहा, इस वजह से उसका पेट उफर आया, इसलिए वह दूसरे दिन की दावत में कोई चीज़ खा न पाया। इस कारण राजा और रानी के मन में मंत्री की बातों पर पूर्ण रूप से विश्वास जम गया। दूसरे दिन रात को मंत्री ने सुदर्शन के वास्ते सुंदर मुलायम बिछौने का इंतज़ाम किया। चूंकि वह पिछली रात को जागता रहा और थका भी हुआ था, इस कारण बिस्तर पर लेटते ही वह आराम से गहरी नींद सोने लगा।

मंत्री ने राजा और रानी को समझाया–"महाराज, अब इसमें जरा भी शक नहीं है कि ये अच्छे परिवार के हैं, मगर मेरा भय तो यही है कि यह राजकुमारी के साथ शादी करेंगे या नहीं!"

रानी बोली—"जो व्यक्ति साधारण व्यक्ति के रूप में अभिनय करता है, वह किस कारण से हमारी पुत्री के साथ विवाह करने से इनकार करेगा? आप कृपया संकोच न करके उससे पूछकर देखिये तो सही।"

इसके बाद मंत्री ने इंदुमती को साथ ले जाकर सुदर्शन के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। पहले सुदर्शन चकित रह गया, मगर बाद को उसने मान लिया। इस पर राजा और रानी की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। एक शुभ मुहूर्त में जल्द ही गरीब ब्रह्मचारी सुदर्शन और राजकुमारी इंदुमती का विवाह संपन्न हुआ।

एक वर्ष तक सुदर्शन ने राजमहल में सारे सुख भोगे। पर इसके बाद उसकी तकलीफ़ें शुरू हो गईं। एक दिन इंदुमती ने अपने पति से कहा—"यहाँ पर और कितने दिन तक रह सकते हैं? हम अपने राज्य को चले जायेंगे?"

सुदर्शन ने चकित होकर पूछा—"क्या कहा? हमारे राज्य को? राज्य है ही कहाँ?"

"जी, हमारा विवाह होने के पहले ही मुझे मालूम हो गया कि आप तो एक महाराजा हैं। अब आप और कितने दिन तक यह नाटक करेंगे?" इन शब्दों के साथ इंदुमती ने मंत्री के द्वारा ली गई परीक्षाओं का परिचय दिया। ये बातें सुनने पर सुदर्शन का दिल धड़क उठा।

अब सुदर्शन के सामने यह सवाल था कि उसे अपनी पत्नी को कोई राज्य दिखाना ही होगा! उसके सामने वह सच्ची बात खोल सकता था, मगर वह यह सोचकर डर गया कि इसका पता लगने पर वह दुखी होगी। अपनी पत्नी को दुख पहुँचाना उसे कदापि पसंद न था।

सुदर्शन ने सोचा—"मैं राजकुमारी के साथ देशाटन करूँगा। कालक्रम में वही अपने आप सच्ची बात समझ लेगी।" यों विचार कर वह अपने सास-ससुर से विदा लेकर एक शुभ मुहूर्त में राज महल से चल पड़ा।

कई सप्ताह और महीने बीत गये। वे एक गाँव से दूसरे गाँव तथा एक देश से दूसरे देश का भ्रमण करते रहे। इंदुमती के मन में यह दृढ़ विश्वास था कि उसका पति उसे अपने राज्य में ले जाएगा। इस विश्वास के बल वह अपने पति के साथ पैदल चली, पेड़ों की छाया में सोई। मगर उसने एक बार भी अपने पति से यह नहीं पूछा कि 'हम कहाँ जा रहे हैं?'

कई बार सुदर्शन ने सोचा कि अपनी पत्नी को कहीं छोड़ अकेले चले जाये। लेकिन उसके प्रति ऐसा गहरा विश्वास करके उसके साथ सारी यातनाएँ झेलनेवाली पत्नी को छोड़कर जाने को उसका मन नहीं माना। राजमहल में रहते वक़्त उन दोनों के बीच जो गहरी आत्मीयता थी, अब वह कई गुने ज्यादा बढ़ गई।

पुरंदर नगर को छोड़ने के छे महीने के बाद वे दंपति कलिंग नगर में पहुँचे। वहाँ पर एक जौहरी के यहाँ इंदुमती के थोड़े गहने बेचकर वे एक भठियारिन के घर बस गये।

उन दोनों को देखते ही भठियारिन के मन में संदेह पैदा हुआ। यह बात स्पष्ट मालूम हो रही है कि इंदुमती एक राजकुमारी है, पर भठियारिन की आँखें सुदर्शन पर केन्द्रित थीं क्योंकि पंद्रह साल

पहले कलिंग राजकुमार को चोर उठा ले गये थे। अगर वह बालक ज़िंदा रहता तो वह सुदर्शन की उम्र का हो जाता। कहीं वह बालक यह तो नहीं?

भठियारिन ने इंदुमती को अलग ले जाकर पूछा—"बेटी, तुम लोग कौन हो? तुम्हारे पति क्या करते हैं?"

"नानीजी, मैं पुरंदर देश की राजकुमारी हूँ। मेरा नाम इंदुमती है। मेरे पति प्रच्छन्न वेष में घूमनेवाले राजकुमार हैं।" इंदुमती ने उत्तर दिया।

"तुम्हारे पति किस देश के राजकुमार हैं?" भठियारिन ने कुतूहल पूर्वक पूछा।

"यह बात मैं नहीं जानती, मैंने आज तक अपने पति से यह बात नहीं पूछी। हम कई दिनों से यात्रा कर रहे हैं।" इंदुमती ने जवाब दिया।

इस पर भठियारिन का संदेह दृढ़ हुआ। उसने राज दरबार में जाकर कलिंग देश के राजा से कहा—"महाराज, मेरे घर एक युवक अपनी पत्नी के साथ आया हुआ है। मेरा संदेह है कि बचपन में ही चोर उठा ले गये राजकुमार ही है वह!"

राजा ने कहा—"तुम उन दोनों को एक बार यहाँ पर ले आओ।"

उसी दिन शाम को भठियारिन सुदर्शन और इंदुमती को राजमहल में ले गई। सुदर्शन को देखते ही कलिंग के राजा और रानी उस पर मुग्ध हुए। उसके अन्दर राजा को रानी की तथा रानी को राजा के लक्षण दिखाई दिये।

इसके बाद राजा ने सुदर्शन से कहा—"बेटा, तुम हमारे ही पुत्र हो! हमारे पास रह जाओ।" सुदर्शन ने झट मान लिया।

कुछ ही दिनों में सुदर्शन का युवराजा के रूप में राज्याभिषेक हुआ। जब पुरंदर देश को यह शुभ समाचार मिला, तब मंत्री ने कहा—"महाराज, मैंने उसी वक़्त बताया था कि वह तो एक राजकुमार है। ओह! कलिंग देश का युवराजा हमारे देश का दामाद होना हमारे लिए कैसे भाग्य की बात है!"

बिना सरायवाला नगर

एक दिन छत्रपुर में राजा और मंत्री छद्मवेष में घूम रहे थे, तब किसी दूसरे देश के दो व्यापारी रास्ते चलनेवाले हर किसी से यह बात पूछ रहे थे–"महाशय, इस नगर में हमारे ठहरने के लिए धर्मशाला कहाँ पर है?"

"इस नगर में कोई धर्मशाला नहीं है।" उस नगर के लोगों ने कहा।

व्यापारी अचरज में आ गये और उनका मजाक़ उड़ाते हुए बोले–"क्या इस महा नगर में मुसाफ़िरों के ठहरने के लिए कोई धर्मशाला तक नहीं है? हमने तो ऐसा शासन कहीं नहीं देखा है।"

उसी वक़्त उधर से गुजरनेवाले एक राजभट ने व्यापारियों की ये बातें सुनीं, वह बोला–"महाशय, परदेशियों के लिए धर्मशालाएँ सुविधाजनक नहीं होतीं, यों विचारकर हमारे महाराजा ने अपने भटों के घरों में ही ठहरने का इंतज़ाम किया है!" यों जवाब देकर वह व्यापारियों को अपने घर ले गया और उन्हें दावत दी।

अपनी इज्ज़त बचानेवाले उस राजभट का महाराजा ने दूसरे दिन खूब आदर-सत्कार किया और तुरंत उस नगर में धर्मशालाएँ बनवाई।
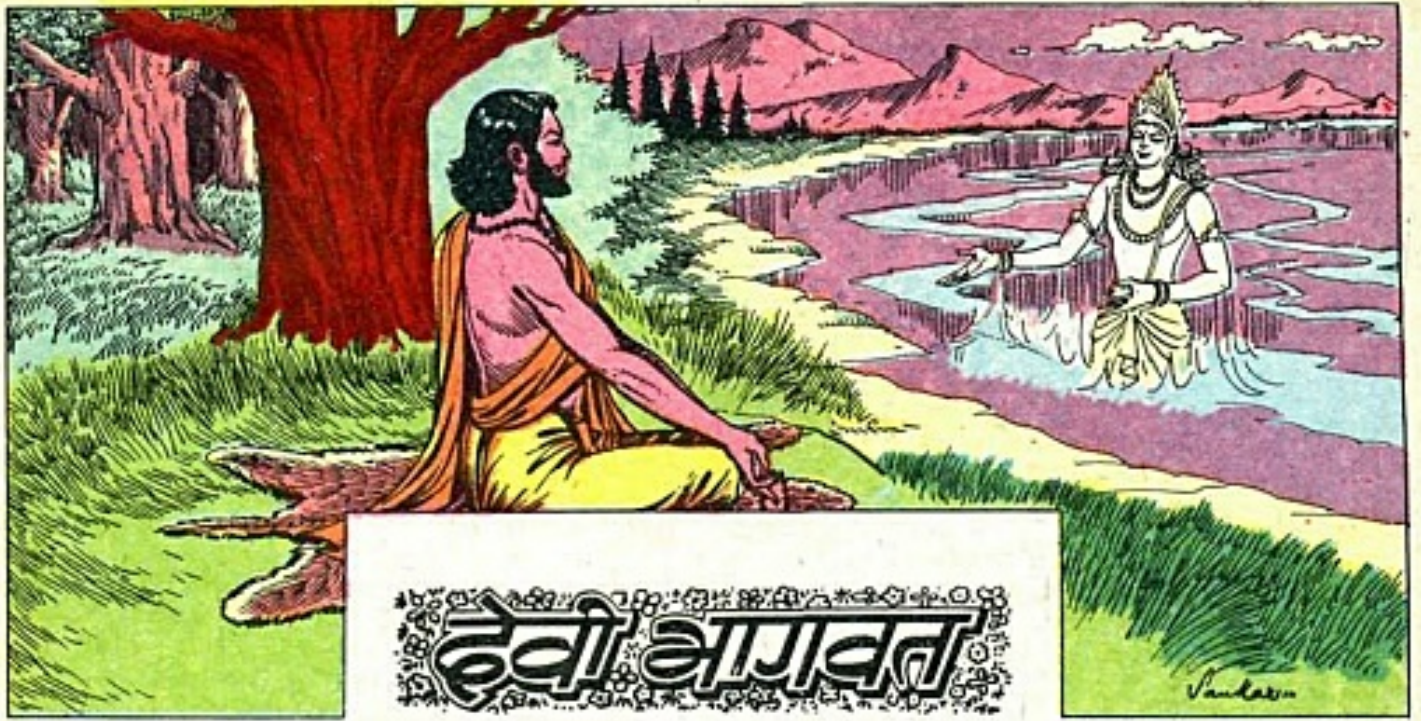
विश्वामित्र ने त्रिशंकु को स्वर्ग में भेज दिया, इसके बाद त्रिशंकु के पुत्र हरिश्चन्द्र राज्य करने लगे, लेकिन उनके कोई संतान न हुई। इस पर उन्होंने अपने पुरोहित वसिष्ठ से विनयपूर्वक पूछा—"महात्मा, आप दैवज्ञ हैं, मंत्रवेत्ता भी हैं। आप वर्तमान के साथ भूत और भविष्य का भी ज्ञान रखते हैं। इसलिए कृपया सोचकर बताइये कि मेरे लिए संतान न होने का कारण क्या है? इसका कारण कहीं मेरी बद क़िस्मत तो नहीं है?"

"यह बात सही है कि संतान के न होने से बढ़कर कोई दूसरा दुख नहीं है। वरुणदेव संतानकर्ता के रूप में प्रसिद्धि पा चुके हैं। आप उनकी पूजा करके उन्हें संतुष्ट करने पर आसानी से संतान पा सकते हैं। मानव के प्रयत्न के बिना आख़िर देवता भी हमारे अनुकूल नहीं हो सकते हैं न?" वसिष्ठ ने कहा।

इस पर हरिश्चन्द्र ने गंगा के तट पर घोर तपस्या की। उस तपस्या पर वरुणदेव बहुत प्रसन्न हुए, प्रत्यक्ष होकर हरिश्चन्द्र से कोई वर मांगने को कहा।

वरुण देव को प्रत्यक्ष देख हरिश्चन्द्र मारे प्रसन्नता के तन्मय हो उठे और एक पुत्र की संतान की कामना की। वरुण ने मुस्कुराकर कहा—"राजन, मैं तुम्हें एक सुंदर और सदाचारी पुत्र जरूर दूंगा,

२५. हरिश्चन्द्र की कथा

लेकिन उसे मुझे तुम्हें बलि पशु के रूप में सौंपना होगा।"

हरिश्चन्द्र को बड़ा धक्का लगा, फिर भी वह लाचार था। बोले–"बांझ कहलाने के बदले यह कुछ हद तक अच्छा ही है। आप की इच्छा की पूर्ति करूँगा। मुझे पुत्र-संतान दे दीजिए।"

"तुम्हें जरूर पुत्र होगा। घर चले जाओ।" वरुण ने समझाया।

हरिश्चन्द्र ने घर लौटकर अपनी पटरानी शैब्या को यह समाचार सुनाया। वह भी बड़ी खुश हुई।

दस महीने के बाद शैब्या के गर्भ से कामदेव जैसा एक सुंदर लड़का पैदा हुआ। हरिश्चन्द्र ने अपने पुत्र का नामकरण रोहित किया; जातक कर्म कराकर बहुत बड़ा उत्सव किया। उस उत्सव में वरुण एक ब्राह्मण के रूप में आये; स्वस्ति वचन सुनाते अपना परिचय दिया और कहा– "राजन, मेरे वरदान के कारण ही तुम संतान हीनता के दोष से मुक्त हुए हो। इसलिए अपने वचन के मुताबिक़ हृदय पूर्वक तुम अपने पुत्र को यज्ञ पशु बनाकर मुझे बलि दे दो।"

हरिश्चन्द्र गहरी चिंता में डूब गये। बहुत समय बाद हुए अपने पुत्र को वरुण के लिए कैसे बलि चढ़ावे? वरुण तो उन्हें छोड़ेंगे नहीं, वे तो देवता ठहरे। अपने हाथों से पुत्र की बलि कैसे दूं? तो ज़िंदगी भर उसे पछताते रहना पडेगा; वह दुख बना रहेगा। यों विचार कर हरिश्चन्द्र ने थोड़ी हिम्मत बटोर ली और वरुण से निवेदन किया–"भगवन, सौर की मैल पिता के लिए दस दिन और माता के लिए एक महीना होती है न? कृपया आप ही बताइये कि इस बीच हम यज्ञ-दीक्षा कैसे ले सकते हैं?"

"तब तो मैं महीने भर बाद आ जाऊँगा।" यों कहकर वरुण चले गये।

हरिश्चन्द्र को लगा कि उनकी जान में जान आ गई हो! उन्होंने ब्राह्मणों में

गाय, तिल और सोना दान किया। अपने पुत्र को देख फूले न समाये।

एक महीना बीत गया। वरुण ने फिर ब्राह्मण के रूप में आकर यज्ञ करने को कहा।

हरिश्चन्द्र ने भारी हृदय से वरुण को प्रणाम किया और बोले–"भगवन, आप के आने से मेरा घर अवश्य पवित्र हो गया है। लेकिन इस शिशु को मैं इस वक़्त कैसे यज्ञ पशु के रूप में समर्पित करूँ? कहा जाता है कि दंत हीन पशु बलि के योग्य नहीं होता।"

"अच्छी बात है! बच्चे के दांत निकलने के बाद मुझे बलि दो।" यों कहकर वरुण चले गये।

थोड़े समय बाद बच्चे के दांत निकल आये, वरुण ने आकर यज्ञ करने का हठ किया। हरिश्चन्द्र ने उनका बड़ा अच्छा सत्कार किया, तब कहा–"महानुभाव! आप से कोई बात छिपी नहीं है। बुजुर्गों का कहना है कि शिरोमुण्डन कराये बिना बच्चा यज्ञ पशु के योग्य नहीं होता। इसलिए इसके बाद ही मैं लड़के की बलि चढ़ाऊँगा।"

"तुम अपने पुत्र के प्रति हद से ज्यादा ममता की वजह से यों बराबर झूठ बोलते हो। मुझे बराबर वापस लौटा रहे हो। तुम कपट स्वभाव के हो! शिरोमुंडन के संस्कार के होते ही तुम मुझे इस लड़के की बलि चढ़ाओ।

द्विजत्व प्राप्त नहीं होता। इसलिए तब तक यह बालक यज्ञ पशु के योग्य नहीं होता। तब तक यह चौथे वर्ण का ही माना जाएगा।"

इसके बाद हरिश्चन्द्र ने उन्हें समझाया–"शास्त्रों में बताया गया है कि ब्राह्मण का उपनयन आठ साल की उम्र में, क्षत्रिय का ग्यारह साल की उम्र में तथा वैश्य का बारह वर्ष की अवस्था में उपनयन होना चाहिए। इसलिए ग्यारहवें बर्ष में रोहित का उपनयन कराकर शास्त्र विधि से यज्ञ करके इस लड़के को बलि पशु बनाऊँगा; आप कृपया बुरा न माने।"

ये बातें सुन बरुण संतुष्ट होकर चले गये। इसके बाद हरिश्चन्द्र अपने पुत्र के साथ आनंद पूर्वक अपने दिन बिताने लगे।

कालक्रम में लड़का दस साल पूरा करके ग्यारहवें में पहुँचा। हरिश्चन्द्र ने डरते-डरते उसका उपनयन कराया।

वरुण ने आकर यज्ञ करने को कहा।

हरिश्चन्द्र ने विनती की–"यज्ञ तो करना ही चाहिए, मैं इस बात को इनकार नहीं कर सकता, लेकिन लड़के ने अभी अभी वेद विद्या का प्रारंभ किया है। मुझ पर अनुग्रह करके उसका विद्याभ्यास पूरा होने दीजिए, तब मैं अवश्य आप को उसकी बलि चढ़ाऊँगा।"

वरना में तुम्हें भयंकर शाप दूंगा। तुम महात्मा इक्ष्वाकु के वंश में पैदा हुए हो, इसलिए यह अपयश मत मोल लो कि हरिश्चन्द्र ने अपने बचन का पालन नहीं किया है।" यों समझाकर वरुण चले गये।

थोड़ा समय और बीत गया। रोहित के शिरोमुण्डन संस्कार का समय आया। उस समय वरुण ने प्रवेश करके कहा–"राजन, बच्चे का शिरोमुंडन करा रहे हो न? अब विलंब ही क्यों? यज्ञ शुरू करो।"

हरिश्चन्द्र ने निस्संकोच झट कह दिया–"भगवन, यह बात मुझे अच्छी तरह से याद है, लेकिन उपनयन के पहले इसे

इस पर वरुण को बड़ा क्रोध आया। वे बोले–"तुम अपनी धूर्तता के कारण बराबर देरी करते हो! अपने पुत्र के प्रति ममता की वजह से कोई न कोई बहाना बना रहे हो। फिर भी इस बार मैं तुम्हारी बात पर यक़ीन करके जा रहा हूँ। तुम्हारे पुत्र की वेद-विद्या के समाप्त होते ही मैं चला आऊँगा।" यों कहकर वरुण चले गये।

थोड़े दिन बीत गये। हरिश्चन्द्र यह सोचकर चिंता में डूब गये–"भगवन, अब वरुण आकर बैठ जायेंगे, मैं उन्हें क्या जवाब दूं?" तब उनके पुत्र रोहित ने पूछा–"पिताजी, आप दुखी क्यों हैं? क्या मैं कारण जान सकता हूँ?" हरिश्चन्द्र ने वास्तविक बात बता दी।

रोहित को अब जान का डर सताने लगा। वह मंत्री के पुत्रों की सलाह लेकर जंगल में भाग गया। हरिश्चन्द्र ने इस ख़याल से रोहित की खोज कराई कि न मालूम वरुण क्या सोच बैठेंगे। लेकिन रोहित का कहीं पता न चला।

इस बीच वरुण यज्ञ कराने का आदेश देते हुए आ पहुँचे। हरिश्चन्द्र डर के मारे कांप उठे। वरुण के चरणों में प्रणाम करके बोले–"देव, मेरा पुत्र प्राणों के भय से कहीं भाग गया है। मैं क्या करूँ? मैंने जंगलों और पहाड़ों में उसकी खोज-ख़बर करवा ली, लेकिन कोई फ़ायदा न रहा। आप जो आदेश देंगे, वही करूँगा। आखिर मैं ही दोषी ठहरा।"

"क्या तुम मुझे ऐसे धोखा दोगे? तुम इसके बदले में जलोदर बीमारी के शिकार हो जाओ।" यों हरिश्चन्द्र को शाप देकर वरुण चले गये।

हरिश्चन्द्र की हालत शिर मुंडाते ही ओले पड़े जैसी हो गई। वे पहले ही अपने पुत्र को खोकर दुखी थे, अब वरुण के शाप की पीड़ा का भी अनुभव करने लगे। एक साल बीत गया। रोहित को

अपने पिता की बीमारी का पता चला, इस पर वह घर लौट रहा था। इन्द्र ने ब्राह्मण के रूप में आकर उसे रोका और सलाह दी–"तुम अपने घर क्यों जाते हो? वे अपनी बीमारी को दूर करने के लिए तुम्हें वरुण की बलि दे बैठेंगे। तुम नाहक़ क्यों मर जाना चाहते हो? तुम अपने पिता के मरने तक कहीं अपनी ज़िंदगी बिता दो, तब जाकर निश्चित हो शासन करो।"

इसके बाद एक साल और बीत गया। अपने पिता को बीमारी के जरिये भारी कष्ट झेलते सुनकर रोहित इस बार भी स्वयं मरने को तैयार होकर घर की ओर चल पड़ा। पर इस बार भी इन्द्र ने उसे रोका।

हरिश्चन्द्र जलोदर बीमारी की पीड़ा सहन न कर पाये, उन्होंने वसिष्ठ से इस बीमारी को दूर करने के लिए कोई उपाय करने की प्रार्थना की।

इस पर वसिष्ठ ने सलाह दी–"वरुणदेव तो तुम्हारे पुत्र की बलि चाहते हैं न? पुत्र तो दस प्रकार के होते हैं! उनमें खरीदा जानेवाला भी एक प्रकार का पुत्र होता है! इसलिए तुम किसी लड़के को अपने पुत्र के रूप में खरीदकर उसे वरुण की बलि दे दो, इस तरह तुम शाप से मुक्त हो जाओ।"

हरिश्चन्द्र ने वसिष्ठ की सलाह मान ली। अपने वास्ते एक पुत्र को खरीद लाने अपने मंत्री को भेजा। मंत्री ने कई दिन ढूंढ़ा, आखिर अजीगर्त नामक दरिद्र ब्राह्मण से उसकी मुलाक़ात हुई। अजीगर्त के तीन पुत्र थे–उनके नाम शुनःपुच्छ, शुनश्शेप और शुनोलांगूल थे।

अजीगर्त से हरिश्चन्द्र के मंत्री ने पूछा–"महाशय, हमारे राजा ने अपनी बीमारी से मुक्त होने के लिए नरमेध करने का संकल्प किया है, क्या तुम बलि पशु के रूप में अपने पुत्रों में से एक को सौ गायें लेकर बेच सकते हो?"

दरिद्र अजीगर्त यह बात सुनकर बड़ा खुश हुआ और अपने बड़े पुत्र को छोड़ बाक़ी दोनों में से किसी एक को बेचने के लिए तैयार हो गया। मगर लड़कों की माँ ने तीसरे बेटे को देने से इनकार किया। इसलिए अजीगर्त ने अपने दूसरे बेटे शुनश्शेप को हरिश्चन्द्र के मंत्री के हाथ बेच डाला। मंत्री ने उस लड़के को ले जाकर हरिश्चन्द्र के हाथ सौंप दिया।

शुनश्शेप को यज्ञ पशु बनाकर यूप स्तम्भ से बांध दिया गया। राजा ने यज्ञदीक्षा ली। इसे देख सारे मुनि दुखी हुए, शुनश्शेप अपनी मौत की याद कर रो पड़ा। बधिक को उस पर दया आ गई। उसने लड़के की बलि देने से अपना हाथ खींच लिया।

यज्ञ में पधारे हुए लोगों की ओर देख हरिश्चन्द्र ने पूछा-"आप लोग बताइये, अब मुझे क्या करना होगा?" इस पर सभा में कोलाहल छा गया। शुनश्शेप दहाड़ मारकर रो रहा था।

इतने में सभासदों के बीच में से अजीगर्त झट उठ खड़ा हुआ और बोला-"महाराज, मैं इस बलि पशु का वध करूँगा। आप मुझे पहले से दुगुनी गायें देंगे?"

हरिश्चन्द्र अजीगर्त की बात सुनकर प्रसन्न हुए, पर सभा में हाहाकार मच गया।

सभासदों ने अजीगर्त की निंदा करते हुए कहा-"यह अजीगर्त ब्राह्मण नहीं,
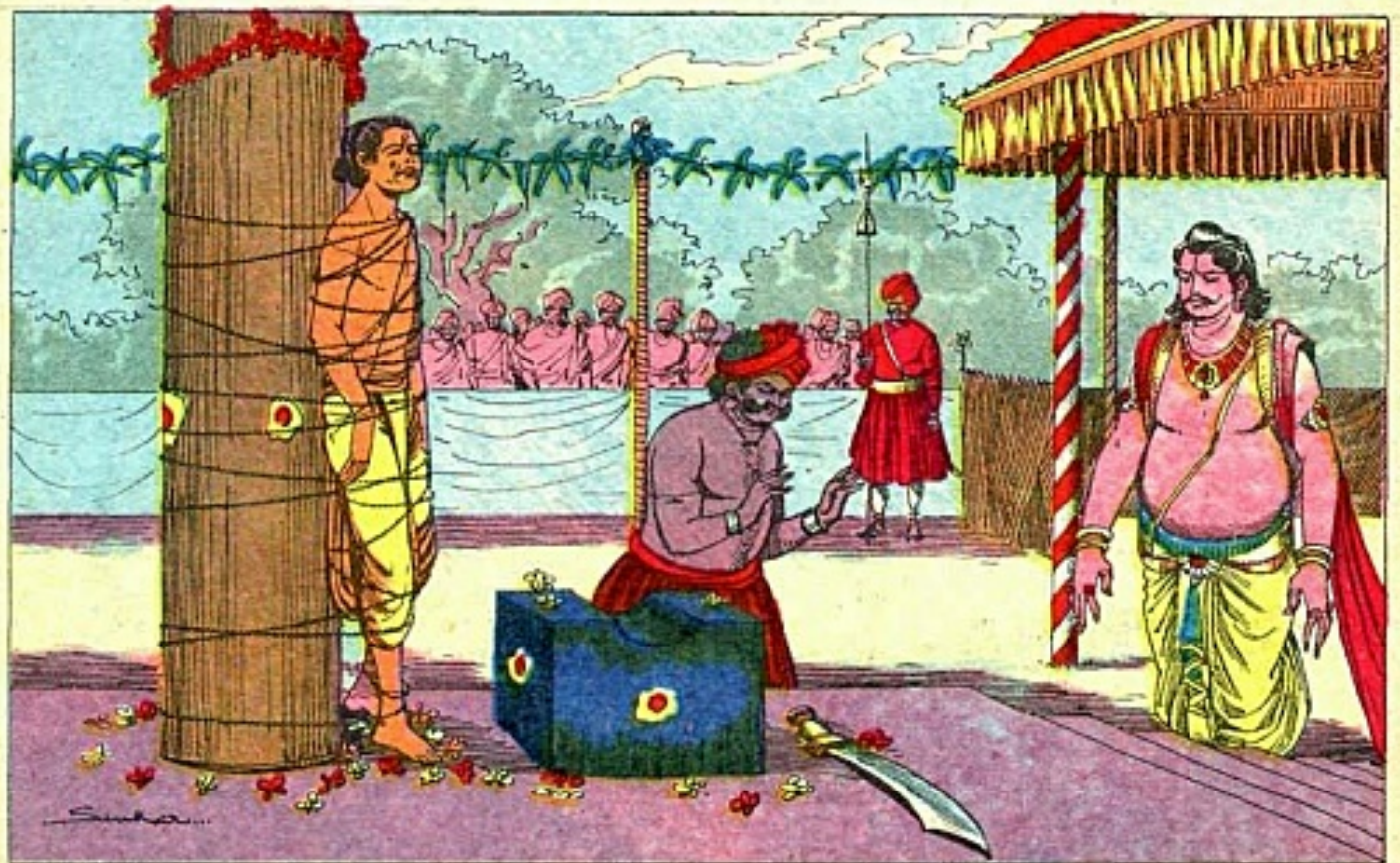
पिशाच है। अपने स्वार्थ और लाभ के वास्ते अपने ही पुत्र की हत्या करने के लिए तैयार हो गया महान पापी है!"

इतने में विश्वामित्र वहाँ पर आ पहुँचे, उन्हें शुनश्शेप पर दया आई, वे बोले– "राजा हरिश्चन्द्र! आप यह पाप से भरा यज्ञ बंद कर दीजिए! आप के प्राण जैसे आप के लिए प्यारे हैं, वैसे क्या इस लड़के के प्राण इसके लिए प्यारे नहीं हैं? मैंने शाप के शिकार हुए आप के पिता को स्वर्गलोक में भज दिया है। इसके बदले आप इस लड़के को मुक्त कर दीजिए!"

"महानुभाव! मैं जलोदर की बीमारी से परेशान हूँ। कृपया आप इस यज्ञ को भंग न होने दीजिएगा! मैंने इस लड़के को यज्ञपशु के रूप में खरीद लिया है।" हरिश्चन्द्र ने जवाब दिया।

इस पर विश्वामित्र को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने शुनश्शेप के पास जाकर कहा–"मैं देखूँगा कि ये राजा तुम्हारा क्या बिगाड़ सकते हैं? मैं तुम्हें एक मंत्र बता देता हूँ। उसकी मदद से तुम्हें सुख प्राप्त होगा।"

इसके बाद शुनश्शेप ने विश्वामित्र के द्वारा सिखाये गये मंत्र का जाप किया, तब वरुणदेव ने प्रत्यक्ष होकर शुनश्शेप को मुक्त कराया, यज्ञ के समाप्त होने की घोषणा की और साथ ही हरिश्चन्द्र की बीमारी को भी दूर किया।

शुनश्शेप ने सारे सभासदों को प्रणाम करके पूछा–"महानुभावो, आप लोग अब यह निर्णय कीजिएगा कि मेरे सच्चे पिता कौन हैं? मैं उन्हीं के साथ चला जाऊँगा।"

इसके उत्तर में कुछ लोगों ने हरिचन्द्र को शुनश्शेप का पिता बताया, कुछ ने अजीगर्त को उसका पिता कहा, कुछ और लोगों ने वरुणदेव को शुनश्शेप का सच्चा पिता बताया।

मगर वसिष्ठ ने स्पष्ट बताया कि विश्वामित्र ही शुनश्शेप का सच्चा पिता है। इस पर शुनश्शेप विश्वामित्र के पीछे चल पड़ा।

पाताल राक्षस

मगध देश के राजा शक्तिसेन के शासन में आन्दोलन शुरू हुआ। भिन्न-भिन्न जातियों और वर्गों के बीच कलह पैदा हुए, परिणाम स्वरूप देश में अराजकता फैल गई। सभी धर्मों, पेशेवर लोग तथा जाति व वर्ण के लोग अपने कर्तव्य भूलकर इस तरह लड़ने-भिड़ने को तैयार हो गये, मानो गृह युद्ध चल पड़ा हो।

इस हालत पर क़ाबू रखने के लिए राजा शक्तिसेन ने कई कानून बनाये। लेकिन उन कानूनों के आधार पर जनता में और ज्यादा भीतरी कलह शुरू हुए।

राजा ने अपनी असमर्थता को भांप लिया। उन्होंने अपने मंत्री व पुरोहित यज्ञशर्मा को बुलाकर पूछा—"महामंत्री, हमारे राज्य में इस अराजकता के फैलने का कारण क्या है? इस हालत में अगर हम देश में शांति और सुरक्षा स्थापित करना चाहते हैं तो हमें क्या करना होगा?"

इस पर यज्ञशर्मा ने कहा—"महाराज, आपकी शंकाओं को दूर करने के लिए मैं आपको एक छोटा इतिहास बताता हूँ। आप कृपया सावधानी से सुन लीजिए।"

इन शब्दों के साथ यज्ञशर्मा ने कहा—"पाताल लोक में राक्षसों का राज्य सब तरह से संपन्न था। ऐसी हालत में अघोर नामक एक राक्षस ने अचानक राजा के विरुद्ध एक आन्दोलन शुरू किया। इस पर राजा ने अघोर को पाताल लोक से निकाल दिया। तब अघोर भूलोक में पहुँचा। उसने भूलोक में प्रवेश करते ही एक रेगिस्तान में अपना क़दम रखा। वहाँ पर उसे खाने-पीने को जब कुछ हाथ न लगा, तब वह मनुष्यों के निवास करनेवाले प्रदेश में आया। वहाँ पर जो भी मानव

उसकी आँखों में पड़ा, उसको पकड़कर खाने लगा ।

इस वजह से भूलोक में बड़ी हलचल मच गई । लोगों को बिलकुल पता न चलता था कि अघोर न मालूम कब किस प्रदेश में आ धमकता है और कब किसको पकड़कर खा जाता है ।

भूलोक में कई देश हैं, कई भाषाएँ और बोलियाँ हैं । सब कोई अपने को दूसरों से बड़ा मानते हैं । किन्हीं दो देशों के बीच दोस्ती नहीं है । हर देश दूसरे देश को जीतकर उस पर अपना हुक्म चलाना चाहता है । इस वजह से अकसर उन देशों के बीच लड़ाइयाँ होती रहती हैं । उन लड़ाइयों में जीत पाने के लिए नये-नये मारण अस्त्र तैयार किये जाने लगे ।

अघोर जब भूलोक में पहुँचा, तब कई वीरों ने आगे आकर अपने अपने देश को उसके हाथों से बचाने की कोशिश की । लेकिन ताड़ के पेड़ के बराबर काले अघोर के बदन पर उन साधारण हथियारों का कोई असर नहीं पड़ता था । वह भूलोक में स्वेच्छापूर्वक संचार करते हुए सब जगह हलचल मचाता ही रहा ।

आखिर यह बात स्पष्ट हो गई कि मनुष्यों के साहस और पराक्रम अघोर को झुका नहीं सकते, साथ ही उस राक्षस के जरिये सभी देशों के लिए हमेशा खतरा बना रहेगा । इस पर सारे देशों के राजाओं ने एक जगह सभा बुलाई और राक्षस से पिंड़ छुड़ाने की योजना पर विचार किया ।

एक अनुभवी और दक्ष राजा ने यों सुझाव दिया—"लाखों चींटियाँ मिलकर एक सांप को मार सकती हैं । घास के तिनकों से मजबूत रस्सा बनाकर मत्त हाथी को बांधा जा सकता है । इसलिए एकता से बढ़कर कोई जबर्दस्त दूसरा साधन नहीं है । भूलोक के सारे मनुष्य एक हो जाये तो राक्षस का सामना करना कोई बड़ी समस्या नहीं है ।"

राजा के ये विचार सुनने पर सब ने यह मान लिया कि इससे बढ़कर कोई दूसरा उपाय नहीं है ।

इसके बाद अघोर का सामना करने के लिए सभी लोग एक जगह इकट्ठे हुए । पहले लोगों की भीड़ सैकड़ों व हज़ारों की संख्या में प्रारंभ हुई, अंत में लाखों और करोड़ों तक पहुँची । सब लोग अपनी अपनी भाषा और संस्कृति की बात भूलकर एकता के सूत्र में जुड़ गये ।

इस तरह लोगों की जो एक महा सेना बनी, वह सेना दो दिन के अन्दर अघोर के समीप पहुँची । फिर क्या था, राक्षस और जनता के बीच लड़ाई शुरू हुई । पर कोई भी आदमी यह सोचकर नहीं डरा कि राक्षस को देखने या उसके पैरों के नीचे आने पर मर जायेंगे । लोगों ने अघोर को चारों तरफ़ से घेर लिया ।

इसे देख राक्षस ने अपनी ज़िंदगी में पहली बार यह जाना कि डर क्या होता है? वह यह भी समझ गया कि इतने सारे लोगों के आक्रमण से उसका वज्र जैसा शरीर भी टिक नहीं सकता है । इसलिए वह जनता का सामना करने का विचार त्यागकर दौड़ने लगा । दौड़नेवाले राक्षसों के पैरों के नीचे आकर कई आदमी कुचल गये । उसके शरीर पर लांघनेवाले कई आदमी नीचे कूदकर अपने हाथ-पैर तोड़ बैठे । तो भी क्या हुआ? आखिर जनता को राक्षस का पिंड छूट गया ।

इसके बाद अघोर ने दो-तीन दफ़े मनुष्यों का सामना करने का प्रयत्न किया और बुरी तरह से घायल होकर भाग गया। फिर उसने जंगलों की शरण ली, अपनी जीवनपद्धति को बदल लिया, जानवरों को किफ़ायती के साथ मारकर खाने लगा।

इसके बावजूद भी मनुष्य के मांस खाने के लोभ का वह संवरण न कर सका। क़िस्मत की बात थी कि एक बार जंगल में उसे एक औरत दिखाई दी। उसे खाने के ख्याल से उसने हाथ फैलाकर उस औरत को पकड़ लिया। इतने में ही वह औरत एक राक्षसी के रूप में बदल गई। इस पर अघोर चकित रह गया। उस राक्षसी को अघोर ने पाताल लोक में देखा था। उसका नाम अघोरिका था।

अघोरिका के साथ अघोर का अच्छा परिचय था। अघोरिका ने कहा—"तुम्हारे चले जाने के बाद मुझे ऐसा लगा कि पाताल लोक की शोभा नष्ट हो गई है। इसीलिए मैं तुम्हें खोजते हुए यहाँ पहुँची। सुरक्षा की दृष्टि से मैं मानवी के रूप में यों चली आई।"

इसके बाद अघोर ने उसे अपने भूलोक के अनुभव सुनाये। अघोरिका ने हँसकर कहा—"पगले, मनुष्य भले ही शक्तिशाली न हो, मगर अक़्लमंद हैं। उनका सामना हमें ताक़त से नहीं, युक्ति के साथ करना है। उनके बीच रहते हमें उन्हीं लोगों के जैसे रूप धरकर उन्हें धोखा देना है। तब यहाँ की ज़िंदगी पाताल लोक से कहीं अच्छी मालूम होगी।"

उस दिन से वे दोनों मानव रूप धरकर मानवों के बीच जीने लगे। जल्द ही उन्हें मालूम हो गया कि मनुष्य अक़्लमंद ज़रूर हैं, लेकिन स्वार्थी हैं। वे दोनों मनुष्यों के स्वार्थ को आसरा बनाकर उनके बीच आपस में लड़ाई-झगड़े पैदा करने लगे। फिर क्या था, जनता के बीच फिर से सब तरह के भेद-भाषा-भेद, जाति-भेद,

वर्ण-भेद, वर्ग-भेद, धर्म-भेद पैदा हो गये। उनके बीच झगड़े-फ़िसाद बढ़ गये। इस हलचल के बीच अघोर और अघोरिका मनुष्यों का अपहरण कर उन्हें खाने लगे, पर मनुष्य एक दूसरे पर संदेह करते रहे, लेकिन उनके बीच रहनेवाले राक्षसों पर संदेह नहीं कर पाये।

राक्षसों को यह ज़िंदगी बड़ी अच्छी लगी। उन्होंने भूलोक में स्थाई रूप से निवास करने का निश्चय कर लिया। उनकी संतान धीरे धीरे दुनिया के कोने-कोने में फैलती गई। तब उन्होंने अपनी संतान को यों समझाया–"सावधानी से सुनो, मानवों को यह मालूम हो जाय कि तुम लोग राक्षस हो, तब वे लोग एक हो जायेंगे। पर मनुष्य रूप के भीतरी राक्षस का वे लोग बड़ा आदर करते हैं। इसी में हमारी ख़ैरियत है।"

आज भी अघोर की संतान के लोग सभी जातियों, धर्मों, भाषाओं तथा देशों में फैलकर मानव जाति के एक होने में बाधा डाल रहे हैं। उनके निज रूप को प्रकट कर मानवों के बीच से जब तक हम उन्हें भगायेंगे नहीं, तब तक भूलोक में शाश्वत रूप से शांति पैदा नहीं हो सकती।"

यज्ञशर्मा ने अपनी कहानी समाप्त कर कहा–"महाराज, जनता हमेशा शांतिपूर्ण जीवन ही बिताना चाहती है। अगर वे लोग लड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं तो इसका मतलब है कि उन्हें उकसानेवाली ताक़तें उन्हीं के बीच होती हैं। इसलिए अराजकता से फ़ायदा उठानेवाले लोगों का पता लगाकर चाहे वे लोग आपके निकट के व्यक्ति क्यों न हो, जनता में अपना प्रभाव क्यों न रखते हो, उनका अंत करने पर देश शीघ्र ही संपन्न होगा और शांति सदा के लिए कायम रहेगी।"

यह कहानी सुनने पर शक्तिसेन ने अपने मंत्री का उद्देश्य समझ लिया और अपने राज्य के भीतर के प्रच्छन्न राक्षसों को हटाया, इसके बाद मगध राज्य की प्रतिष्ठा बढ़ गई।
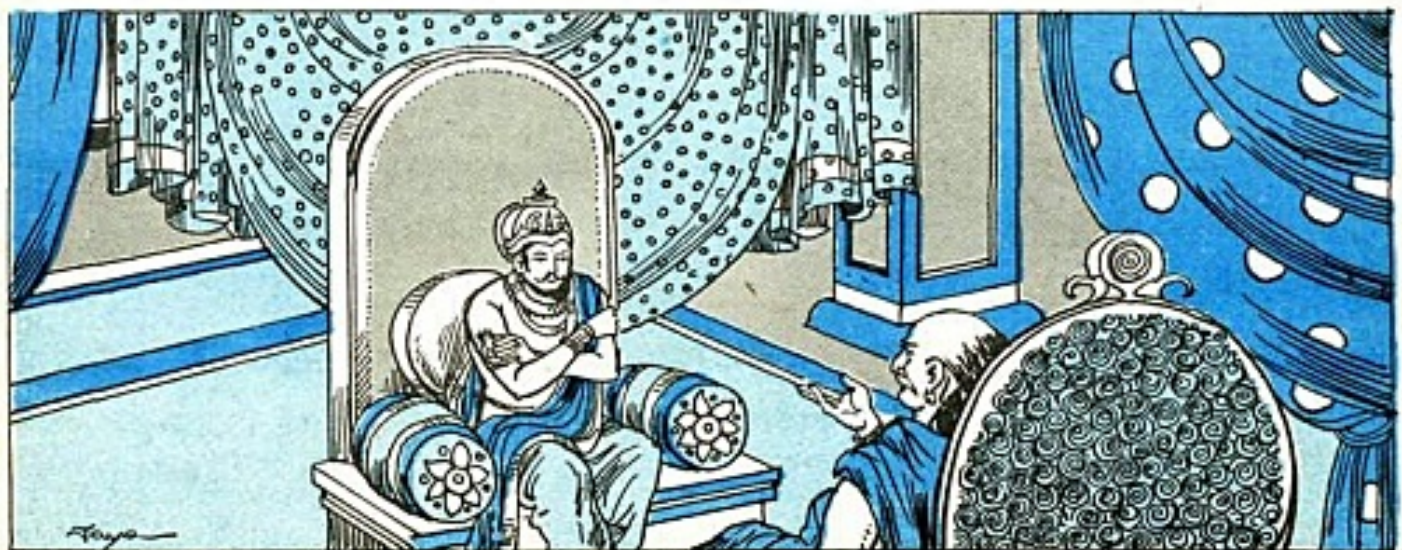
फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जनवरी १९८१ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

Brahmdev

★

D. N. Shirke

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ नवम्बर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

सितंबर के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : **शिकार की तलाश जारी है!**

द्वितीय फोटो : **रुको, इस बार मेरी बारी है!!**

प्रेषक : **राजा दुबे,** जिला प्रकाशन कार्यालय, झाबुआ (म. प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

अपनी आँखें बंद करो और जो चाहो माँगो
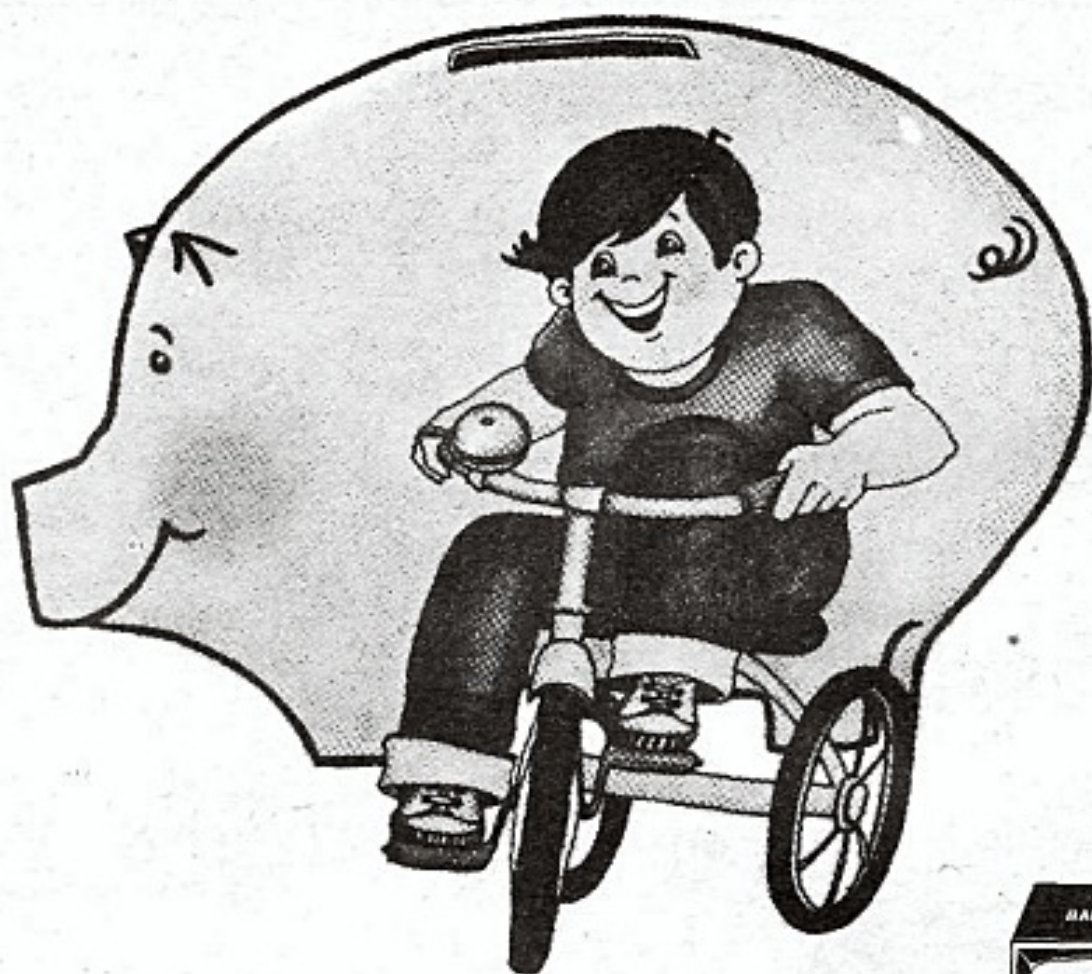
तुम जो चाहोगे, वो मिलेगा बशर्ते बचत करो. तुम खुद अपने पैसों से साइकिल, खिलौने या गुड़िया, जो चाहो खरीद सकते हो. केनरा बैंक की बालक्षेम जमा योजना तुम्हारे लिए ही है.

बालक्षेम के सुंदर से चाबीवाले गुल्लक में तुम पैसे जमा करते जाओ— भर जाने पर केनरा बैंक में जाकर अपने पैसे जमा करा दो. और फिर गुल्लक भरना शुरू कर दो. तुम्हारी रकम बढ़ती ही जायेगी क्योंकि हम उसमें पैसे मिलाते जायेंगे. जल्द ही इतनी रकम जमा हो जायेगी कि तुम मनचाही चीज़ें खरीद सकोगे.

अधिक जानकारी के लिए केनरा बैंक की अपनी नज़दीकी शाखा में चले आओ. हमारी अन्य विशेष योजनाएं हैं : **कामधेनु, विद्यानिधि और निरन्तर.**

बालक्षेमा जमा योजना

BALAKSHEMA

CANARA BANK

केनरा बैंक

GROWING TO SERVE

CANARA BANK

(एक राष्ट्रीयकृत बैंक)

देशभर में 1,200 से भी अधिक शाखाएँ.

maa CB 4 Hin 80

कैम्पा का आरेंज* स्वाद....
पीजिए, मज़ा ऐसा कि याद कीजिए
कैम्पा से ज़िदगी में मौजबहार, इसमें अब आरेंज* स्वाद की हलचल जगाइए, कैम्पा पीजिए, पिलाइए. मौजमस्ती का रंग, मौजमस्ती का स्वाद—कैम्पा आरेंज* स्वाद. ज़िंदगी की प्यास अधूरी, कैम्पा आरेंज* स्वाद से कीजिए पूरी—इन सभी रंगारंग प्यासे लोगों की तरह...अभी.
*आर्टिफ़िशियल फ्लेवर
Campa
आरेंज स्वाद
OBM/4839
Campa

आपके लिये अपने मनचाहे बिस्कुटों के नक्कालों को पकड़ना अब बच्चों का खेल है.

P-A-R-L-E के हिज्जे जांचिये.
हमारे नक्काल हैं बड़े होशियार. आपकी आँखों में धूल झोंकने के लिये वे P-A-R-L-E की जगह P-E-R-L-E या P-E-A-R-L- लिखते हैं और G-L-U-C-O की जगह G-L-U-C-O-S-E लिखते हैं.

याद रखिये,
पारले मोनॅको और क्रैकजॅक कभी खुले नहीं बिकते. इन्हें जब भी खरीदें फैक्ट्री के सीलबन्द पैकेटों में ही खरीदें, ताकि आपको असली बिस्कुट मिलने का भरोसा रहे.
हाँ, पारले ग्लुको पैकेट में भी बिकते हैं, और खुले भी... पर इन्हें खुले खरीदते वक्त बिस्कुट पर पारले ग्लुको के हिज्जे जांच लीजिये.

चख कर देखिये.
स्वाद ही असली कसौटी है. धरती आसमान एक कर, ये नक्काल, हमारे बिस्कुटों और पैकेटों की शक्लोसूरत की नकल भले कर लें, पर पारले का बढ़िया स्वाद और बेहतरीन क्वालिटी कहां से लायेंगे?

वर्ल्ड सिलेक्शन पारितोषिक विजेता

अपने-अपने दायरे में सबसे ज़्यादा बिकनेवाले बिस्कुट– बेशुमार नकलें... लेकिन वो बात कहां?

ग्लुको पारले मोनॅको पारले क्रैकजॅक

everest/80/PP/340-hn